समता कथा माला पुष्पांक-3

दहेज की बलिवेदी पर

श्री धर्मेशमुनिजी म. सा.

प्रकाशक
श्री अखिल भारतवर्षीय साधुमार्गी जैन संघ
समता भवन, बीकानेर (राज.)

❖ समता कथा माला पुष्पांक- 3

❖ दहेज की बलिवेदी पर

❖ श्री धर्मेशमुनिजी म.सा.

❖ प्रथम संस्करण : अप्रेल, 2010, 3100 प्रतियाँ
द्वितीय संस्करण : अप्रेल, 2012, 1100 प्रतियाँ

❖ मूल्य : 6/-

❖ अर्थ-सहयोगी :
श्रीमान् सुन्दरलालजी-विनोदकुमारजी दुग्गड़- कोलकाता

❖ प्रकाशक :
श्री अ. भा. साधुमार्गी जैन संघ
समता भवन, आचार्य श्री नानेश मार्ग,
श्री जैन पी.जी. कॉलेज के सामने, बीकानेर- 334401 (राज.)
दूरभाष : 0151-2270261, 3292177, 2270359 (Fax)
visit us : www.shriabsjainsangh.com
e-mail : absjsbkn@yahoo.co.in

❖ आवरण सज्जा व मुद्रक :
तिलोक प्रिंटिंग प्रेस, बीकानेर
दूरभाष : 9314962475

प्रकाशकीय

आज के इस विषम युग में जहाँ मनुष्य नैतिकता, धार्मिकता एवं सामाजिकता के गुणों से दूर होता जा रहा है। वहीं आजकल पारिवारिक सम्बन्ध भी निरन्तर बिगड़ते जा रहे हैं। पारिवारिक क्लेश का एक मुख्य कारण दहेज भी रहा है। दहेज की यह प्रथा दिन-प्रतिदिन विकराल रूप लेती जा रही हैं और यहीं कारण है कि प्रतिदिन दहेज के इस भस्मासुर में अनेक युवतियाँ भेंट चढ़ जाती है। शास्त्रज्ञ, तरुण तपस्वी, प्रशान्तमना आचार्य- प्रवर 1008 श्री रामलालजी म.सा. के आज्ञानुवर्ती शासन प्रभावक, विद्वद्वर्य श्री धर्मेशमुनिजी म. सा. ने अपनी इस कृति में इस सामायिक पीड़ा को कथा के माध्यम से उठाते हुए इस कुरीति का चित्रण पद्मा नामक युवती की कथा से किया है।

इस पुस्तक में पद्मा और सतीश मुख्य पात्र है। दोनों पति-पत्नी अत्यन्त, विनम्र, मृदुभाषी एवं सर्वगुण सम्पन्न दम्पत्ति है लेकिन पद्मा के सास-ससुर एवं देवर-देवरानी धन के लोभी, लालची एवं दहेज प्रथा के पक्षधर है। समय-समय पर दानों पात्रों को प्रताड़ित किया जाता है और अंत में दोनों ही पात्र दहेज की बलिवेदी पर चढ़ जाते हैं।

पुस्तक में पद्मा ने माता-पिता, पति, समाज के कर्णधारों, सहेलियों एवं धर्माचार्यों को जो पत्र लिखें हैं वह इस पुस्तक का सम्पूर्ण सार है। साहित्य की भाषा इतनी सरल

एवं सहज है कि बाल, युवा, वृद्ध सभी को पढ़ने में आसानी महसूस होगी। दहेज की बलिवेदी नामक यह पुस्तक समाज में इस कुरीति के खिलाफ एक ऐसा संदेश है, जिसे पढ़ने पर मन में दहेज के प्रति नफरत-सी उत्पन्न होती है। एक महान् रचनाकार की यहीं महती सफलता है कि वह अपनी रचना के माध्यम से समाज को संदेश दे सके और यहीं कार्य विद्वद्वर्य श्री धर्मेशमुनिजी म.सा. ने किया है।

विद्वद्वर्य श्री धर्मेशमुनिजी म.सा. द्वारा लिखित इस पुस्तक को समाज के समक्ष प्रस्तुत करने का हमारा यही लक्ष्य है कि आज का युवा वर्ग इस कुरीति के परिणाम को समझ सके व समाज से इस कुरीति को समाप्त करने के लिए सहभागी बन सके।

उपरोक्त पुस्तक समता कथा माला का तृतीय पुष्पांक के रूप में आप सभी के समक्ष प्रस्तुत है। इस पुस्तक के प्रकाशन में संघ के राष्ट्रीय अध्यक्ष उदारमना श्री सुन्दरलालजी विनोदकुमारजी दुग्गड़-कोलकाता ने जो सहयोग प्रदान किया है पूर्व में भी इस पुस्तक का प्रथम संस्करण आप ही के सहयोग से करवाया गया था। इसका अब द्वितीय संस्करण प्रकाशित कर रहे है। तदर्थ हम आपके अत्यन्न आभारी है। विश्वास है कि सत्साहित्य के प्रकाशन में आपका निरन्तर सहयोग प्राप्त होता रहेगा। इसी मंगल मनीषा के साथ...

राजमल चौरड़िया

संयोजक–साहित्य प्रकाशन समिति

अर्थ सहयोगी परिचय

संघरत्न, शासन गौरव, प्रख्यात समाजसेवी, उदारमना, सरलहृदयी दानवीर भामाशाह, राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री सुन्दरलालजी दुगड़, कोलकाता ने कर्मवीरों, शूरवीरों और दानवीरों की पुण्यभूमि मरुधरा की पावनभूमि, माँ करणी की लीला स्थली देशनोक में सन् 1954 में श्री मोतीलालजी दुगड़ के ज्येष्ठ पुत्र के रूप में आपने जन्म लिया।स्वनाम धन्य स्व. श्री मोतीलालजी दुगड़ धर्मानुरागी, दानवीर तथा शिक्षा प्रेमी थे।समाज और गाँव में आपकी अच्छी प्रतिष्ठा थी। श्री सुन्दरलालजी दुगड़ ने अपनी प्रारम्भिक शिक्षा श्री करणी उच्च माध्यमिक विद्यालय, देशनोक में ही प्राप्त की। श्री करणी उच्च माध्यमिक विद्यालय, देशनोक से हायर सैकेण्डरी परीक्षा उत्तीर्ण कर आप सन् 1971 में कोलकाता आ गए।कोलकाता में आपने अपने पैतृक व्यवसाय स्टेशनरी और मनिहारी को संभाला। अपने माता-पिता से विरासत में प्राप्त संस्कारों से युक्त श्री दुगड़जी ने लगन, परिश्रम एवं नैतिक कार्यशैली के साथ भवन निर्माण का कार्य प्रारम्भ किया एवं शीघ्र ही इस क्षेत्र में अग्रणी रूप में उभरकर सामने आये। यह आपकी उच्च कार्य कुशलता का परिणाम है कि आज आपकी गिनती कोलकाता महानगर के प्रतिष्ठित भवन निर्माताओं में होती है। भवन निर्माण के साथ-साथ वर्तमान में आप ट्रांसमिशन लाईन टॉवर, पावर स्टेशन, वुवेन सेक्स बेग तथा ऑटो मोबाईल उद्योग से जुड़े हुए है।

आपका पाणिग्रहण संस्कार सन् 1972 में बीकोनर निवासी सुश्रावक श्री केवलचन्दजी सेठिया की सुपुत्री कुसुमदेवी के साथ

हुआ। श्रीमती कुसुमदेवी सच्चे अर्थों में धर्मपत्नी शब्द को सार्थक करती हुई धर्म के पथ पर निरन्तर गतिमान है। मधुर मुस्कार के धनी श्री दुगड़जी के द्वार पर गया हुआ कोई भी व्यक्ति खाली नहीं लौटता। लक्ष्मी की कृपा को संचय तक ही सीमित नहीं रखते हुए श्रीदुगड़ ने विसर्जन का महत्वपूर्ण उदाहरण सभी के समक्ष प्रस्तुत किया है। आपके द्वारा प्रदत्त सेवा प्रकल्पों की श्रृंखला इतनी लम्बी एवं विस्तृत है कि उसे संक्षिप्त में समेटना आसान कार्य नहीं है। आपने लोककल्याण हेतु शिक्षा के क्षेत्र में कुसुम सुन्दर दुगड़ हायर एज्युकेशन फण्ड की स्थापना की जिसके माध्यम से ब्याज रहित ऋण शिक्षा हेतु लॉन (ऋण) दिया जाता है। इसी कड़ी में वीर तेजा महिला शिक्षण संस्थान, मूंडवा (राज.) में स्व. सूरजीदेवी मोतीलाल दुगड़ तथा आचार्य श्री नानेश छात्रावास वींग का निर्माण करवाया गया। चिकित्सा के क्षेत्र में बीकानेर में स्व. सुरजीदेवी मोतीलाल दुगड़ न्यूरो साईंस सेन्टर का निर्माण कार्य चल रहा है जो शीघ्र ही सम्पन्नता की ओर अग्रसर है।

श्री अ.भा. साधुमार्गी जैन संघ की प्रत्येक प्रवृत्ति में आपने मुक्तहस्त से दान देकर भामाशाह की उपाधि को निश्चित रूप से सार्थक किया है। आचार्य श्री नानेश ध्यान केन्द्र, गणेश जैन छात्रावास, आगम अहिंसा प्राकृत शोध संस्थान, नवीन केन्द्रीय कार्यालय समता भवन, साहित्य प्रकाशन, धर्मपाल प्रवृत्ति, सिरीवाल प्रवृत्ति, धार्मिक शिविरों का संचालन, धार्मिक परीक्षाओं का आयोजन, आचार्य श्री नानेश समता विकास ट्रस्ट-नानेशनगर दांता सहित सभी कार्यों में सदैव अग्रणी रहते हैं। अपने महत्वपूर्ण कार्यों एवं सामाजिक सेवा के कारण आप श्री जैन विद्यालय हावड़ा के यशस्वी सभापति, श्री श्वेताम्बर स्थानकवासी जैन सभा के ट्रस्टी, श्री साधुमार्गी जैन संघ देशनोक के पूर्व सभापति, आगम अहिंसा समता प्राकृत संस्थान के संरक्षक, श्री अ.भा. साधुमार्गी जैन संघ के

पूर्व उपाध्यक्ष एवं समता भवन निर्माण समिति के राष्ट्रीय संयोजक, पश्चिमी बंगाल मारवाड़ी सम्मेलन के संरक्षक, आर्यन्स स्कूल अगरपाड़ा के न्यासी सहित अनेकानेक लोकल्याणकारी संस्थाओं से जुड़े हुए हैं। परम श्रद्धेय आचार्य-प्रवर 1008 श्री रामलालजी म. सा. के अनन्य आस्थावान सुश्रावक श्री दुगड़जी सम्प्रति श्री अ.भा. साधुमार्गी जैन संघ, बीकानेर के राष्ट्रीय अध्यक्ष पद पर लगातार दो बार अपनी सेवाएँ प्रदान कर चुके हैं। आपके पद पर रहते हुए संघ ने अपूर्व उन्नति एवं चौमुखी विकास हुआ।

आपके सामाजिक कार्यों की लम्बी श्रृंखला को देखते हुए वर्ष 2008 में श्री श्वेताम्बर स्थानकवासी जैन सभा, कोलकाता द्वारा आपका सार्वजनिक नगारिक अभिनन्दन किया गया, जिसमें सैकड़ों संस्थाओं द्वारा आपको सम्मानित किया गया। इस अवसर पर श्री अ.भा. साधुमार्गी जैन संघ, द्वारा आपके सरलहृदयी भामाशाह अलंकरण से सम्मानित किया गया। आप एस.एल. दुगड़ चैरिटेबल ट्रस्ट के माध्यम से निरन्तर मानवता की सेवा कर रहे हैं। आपके संस्कारित परिवार में एक पुत्रा श्री विनोद कुमार-शीतल दुगड़, एक सुपुत्री रूपरेखा-आलोक झाबक, तीन पौत्रियां-यशस्वी, मनस्वी, सुहानी, एक दोहित्र श्री जीत तथा एक दोहित्री गूंजन है। समस्त दुगड़ परिवार संघ एवं शासन की अभूतपूर्व सेवा कर रहा है।

दहेज की बलिवेदी पर

(1)

पद्मा एक मध्यमवर्गीय जैन परिवार में जन्म लेने वाली सुशील बाला थी, जिसने अभी-अभी बारहवीं परीक्षा अच्छे अंकों से पास की ही थी। जिससे स्कूल की प्राचार्या से लगाकर सभी अध्यापक-अध्यापिकाएँ भी प्रसन्नता की अनुभूति करते हुए चाहते थे कि इसका अध्ययन चालू रहे ताकि भविष्य में ग्रेज्युएट बनकर वह अपने पांवों पर खड़ी रह सके और आर्थिक स्थिति से आत्मनिर्भर बन सके। साथ ही सखी-सहेलियाँ भी इसी इच्छा से उसको प्रेरित करती कि वह आगे का अध्ययन जारी रखे ताकि आगे जाकर नारी समाज के अभ्युत्थान के लिये आदर्श बनकर पथ-प्रदर्शन कर सके और वह खुद भी अन्तर दिल से यही चाहती थी, पर समस्या सबसे बड़ी जटिल यही थी कि पारिवारिक आर्थिक स्थिति जैसी चाहिये, वैसी सुदृढ़ नहीं थी कि कॉलेज के एडमिशन से लगाकर पूर्णता तक का व्यय उठा सके क्योंकि तत्कालीन कॉलेज की व्यवस्थाएँ भी ऐसी अव्यवस्थित थी कि अच्छे गौरवशाली परिवार की बालाओं का तो वहाँ प्रवेश पाकर अध्ययन करना खतरे से खाली नहीं था क्योंकि अधिकांश कॉलेजों में युवक-युवतियों के सह-अध्ययन की ही व्यवस्था थी।

साथ ही जो प्राईवेट कॉलेज थे, वे भी एक व्यवसायी संस्थानों के रूप में कार्य कर रहे थे। जहाँ जाओ तो वहाँ सबसे पहला प्रश्न यही उभरकर सामने आता कि डोनेशन फीस कितनी दे सकोगे ? उसको सुनकर ही मन भय-भ्रान्त बन जाता कि इतनी बड़ी राशि की कैसे व्यवस्था बिठाये ? साथ ही, जब पहले ही इतनी बड़ी राशि की मांग है तो आगे अध्ययन व उसके साधनों हेतु कितनी बड़ी राशि की आवश्यकता होगी ? इन सारी बातों का चिन्तन करते हुए पद्मा की आगे अध्ययन की तीव्र तमन्ना होते हुये भी वह आगे हिम्मत नहीं जुटा पा रही थी। समस्या यह थी कि अपनी भावना को माता-पिता के सामने कैसे अभिव्यक्त करे ? पारिवारिक स्थिति उससे छिपी हुई नहीं थी। वह जानती थी कि घर में माता-पिता के अलावा चार भाई-बहिन हैं। उनकी भी पढ़ाई इत्यादि की व्यवस्था करना सारे परिवार एवं सगे-सम्बन्धियों का उत्तरदायित्व व भार एकमात्र पिताजी पर है। घर में कमाने वाले एक ही हैं और व्यापार भी जैसा चाहिये, वैसा नहीं चल रहा है। बस, जैसे-तैसे परिवार का गुजारा हो जाता है, जिससे खानदान, परिवार की समाज एवं गाँव में इज्जत बनी हुई है। बस, इसी को सच्चा धन मानकर सुखमय जीवन जीने का आनंद ले रहे थे। इसलिये पद्मा उपरोक्त सारी बातों को ध्यान में रखकर अध्यापिकाओं-सहेलियों के प्रोत्साहित करने पर भी अपने मन की तीव्र तमन्ना को भी मन में ही दबाकर इस निर्णय

पर पहुँची कि अब मुझे अपने अध्ययन के लिये पिताश्री पर अधिक बोझ बनाना ठीक नहीं है। यदि मुझे अपने जीवन का विकास करना है तो इसके लिये इतना पैसा खर्च करके कॉलेज में एडमिशन होना ही जरूरी नहीं है। नारी जीवन को आदर्श बनाने में कॉलेज की डिग्री ही सहायक नहीं बन सकती है। जब तक कि जीवन जीने की कला न आवे और जीवन जीने की कलाओं में पाककला, चित्रकला, निपाई-पुताई, रंगाई, संगीत आदि अनेक कलाएं सीखना व सिखाना आवश्यक है, जिससे नारी जीवन सार्थक हो सकता है। अब इन सब कलाओं को सीखने का ही लक्ष्य मजबूत बना लेना चाहिए। बस, उसी समय पद्मा ने उन कलाओं में निष्णात बनने हेतु दृढ संकल्प धारण कर लिया।

(2)

यह तो पद्मा के जीवन के पूर्वसंस्कार का ही ऐसा पुण्य प्रताप था कि हर एक व्यक्ति उससे सहज प्रभावित हो जाता था। उसकी वाणी की मधुरता, कार्य की कुशलता एवं सीखने की ललक से जहाँ भी, जिसके पास जाती, वे उसको अपना पूरा अपनत्व देते और अपने अनुभव व कला का खजाना खोल देते। पद्मा भी उस खजाने का पूरा लाभ उठाने के लिये पूर्ण तत्पर रहती जिससे वह हर कला, चाहे वह पाककला हो चाहे चित्रकला हो अथवा संगीतकला हो, सब में पूर्ण रूप से प्रवीण हो गई थी। पद्मा का व्यवहार

भी इतना मधुर व मिलनसार था कि जो भी उसके संसर्ग में एक बार भी आ जाता, वह सदा के लिये उसका हो जाता। यही कारण था कि उसके घर में सहेलियों का हमेशा जमघट बना रहता था। कोई बुनाई सीखने के बहाने तो कोई अन्य कलाओं को सीखने हेतु पहुँच जाती थी, जिनको पद्मा बड़े आदर व प्रेम के साथ सिखाती थी। साथ ही धार्मिक कला में भी पूर्ण प्रवीण थी। क्योंकि उसकी अन्तःआस्था यही थी कि वास्तविक सुख-शान्ति की आधारशिला तो धर्मकला ही है। इसलिये उसने सामायिक, प्रतिक्रमण के साथ ही तत्त्वज्ञान आदि भी सीख लिया और यथासमय उनकी आराधना-साधना भी करती रहती।

अब धीरे-धीरे पद्मा किशोरावस्था को पार करके यौवनावस्था में प्रवेश करने लगी तो उसी के साथ उसके सौम्यता, सरलता, लज्जाशीलता आदि गुण भी उत्तरोत्तर अधिक से अधिक विकसित होने लगे। साथ ही ज्यों-ज्यों उसका यौवन अंगड़ाई लेने लगा तो उसका रूप भी निखरने लगा, जिससे वह अब किशोर बाला की जगह युवती के रूप में दिखने लगी। अतः उसके माता-पिता के अन्तः मन में उसके योग्य घर और वर देखकर सगाई करके शीघ्रातिशीघ्र विवाह करने की चिन्ता सताने लगी। वे दिन-रात इसी चिन्ता में डूबे रहते कि पद्मा के योग्य कोई घर-वर मिले। जिसके लिये उन्होंने सगे-सम्बन्धियों के माध्यम से एवं अपने पुरुषार्थ से अनेक गाँव-नगर छान लिये। कई जगह

के वर पसंद आये तो कई घर पसन्द नहीं आये और कई जगह के घर पसन्द आये तो वर पसन्द नहीं आये। तो कई जगह के घर-वर दोनों पसंद आये परन्तु सम्बन्धा की बातचीत करने पर भी हाँ-हूँ करके टालमटोल कर देते।

कइयों ने पद्मा को देखकर पसन्द भी कर लिया और यह भी कह दिया कि हम आपको अपने घर में सगे-सम्बन्धियों से बातचीत करके पुनः जबाब देंगे। इस आश्वासन के कारण मन में आश्वस्त होकर इन्तजार करने लगे कि अब समाचार आवे, अब आवे। लेकिन इस इन्तजार में दिन बीते, सप्ताह बीते, महीने बीत गये पर कोई उत्तर नहीं मिला। ऐसे एक नहीं अनेक व्यक्तियों ने आश्वासन दिये, पर वापस कोई उत्तर नहीं मिले। यह देखकर पद्मा के माता-पिता बड़ी परेशानी का अनुभव करते हुए चिन्तन करने लगे कि आखिर इसमें क्या रहस्य है ? सब पसन्द करके जाते और मीठे-मीठे आश्वासन भी देते पर स्वीकृति या अस्वीकृति रूप स्पष्ट उत्तर कोई नहीं देते हैं। बहुत दिनों तक इसके बारे में गहराई से चिन्तन करने पर आखिर इस निर्णय पर पहुँचे कि हो-न-हो इसमें अन्य किसी प्रकार की बाधा नहीं होते हुए भी दहेज रूप पिशाच ही अपना मुँह फाड़कर बाधक बनकर खड़ा है और यह भी स्पष्ट प्रतीत हो रहा है कि इसकी क्षुधा की पूर्ति हुए बिना यह सम्बन्ध जुड़ नहीं सकता है।

साथ ही, अब तो यह प्रकारान्तर से बिल्कुल स्पष्ट

रूप में उभरकर सामने भी आने लग गया। जिससे भी पद्मा के सम्बन्ध की बात की जाती तो कहते कि आपके खानदान, लड़की आदि सब पसन्द हैं परन्तु आपके पहले भी अमुक-अमुक गाँव के व्यक्ति बच्चे को देखने के लिये आये थे। उनको तो बच्चा इतना पसन्द आया कि वे अत्याग्रहपूर्वक बोलने लगे कि आप बस स्वीकृति-भर देने की कृपा करें। बस, फिर हम आपको पूरा विश्वास दिलाते हैं कि आपके परिवार के गौरव के अनुसार किसी प्रकार की कमी नहीं रखेंगे। कम से कम बारातियों के स्वागत हेतु पच्चीस आइटम तो होंगे ही। साथ ही टी.वी. सैट, फ्रीज, सोफासैट, वरराजा के लिए चेन, घड़ी, स्कूटर आदि जो भी मांग होगी वह पूरी करेंगे। साथ में दो पेन, तीन पेन जितना माल दे देंगे (एक पेन एक लाख का कोड वर्ड) लेकिन हमने ही यह कहते हुये बात टाल दी कि अभी वह खुद ही शादी करना नहीं चाहता। ऐसे ही कोई कहता कि अभी तो वह पढ़ रहा है। अभी तो बच्चा दो-तीन साल तक शादी के लिये तैयार नहीं हो रहा है। ऐसी अनेक तरह की बातें बता कर वे यह स्पष्ट कराना चाहते कि आपकी क्या इच्छा है अथवा आप कितना दहेज में देंगे और कितना खर्च करेंगे ? इस प्रकार उन सबकी बातें सुन-सुनकर पद्मा के माता-पिता इस निर्णय पर पहुँचे कि निश्चित रूप से पद्मा का दहेज बिना विवाह होना सम्भव नहीं। लेकिन समस्या तो यह थी कि इतना धन लावें कहाँ से ? क्योंकि यहाँ तो

तन तोड़कर रात-दिन मेहनत करके भी इतनी कमाई कर पाते कि परिवार का पोषण आराम से हो जाये और घर आये मेहमानों की, अतिथियों की आवभगत के साथ अभ्यागतों को भी कुछ सन्तुष्ट करके भेज सकें।

यदि व्यापार में लगी रकम दहेज में लगा दें तो पेढ़ी की इज्जत के साथ घर चलाना भी कठिन हो जाये और यदि उधार ले कर दिया तो ब्याज का खड्डा भरना भारी पड़ जाये। इन सारी बातों का चिन्तन करते-करते अन्तर्मन थर्राने लग गया। फिर भी अपनी घरेलू परिस्थितियों का चिन्तन करते हुये पाँच हजार तक का दहेज देने की तो हिम्मत बना ली और इन्तजार करने लगे किसी योग्य सम्बन्ध के आने की।

(3)

एक दिन संयोगवशात् सतीश नामक एक युवक किसी कार्यवशात् दूर रिश्तेदारी के लगाव से घर पहुँच गया। जो स्वयं ग्रेज्युएट, धार्मिक प्रवृत्ति वाला, सहनशील, मिलनसार और व्यवहार कुशल था। ज्योंहीं उसने घर में प्रवेश किया तो सारे परिवार ने उसका स्वागत किया और एक कमरे में उसका सामान रखाकर उसको नाश्ते-पानी का आग्रह किया तो उसने मुस्कराते हुए पद्मा को नहाने व फ्रेस होने की इच्छा व्यक्त की। तब पद्मा ने ही उसकी इच्छानुसार सारी व्यवस्था कर दी।

इस व्यवस्था को करने के बीच उनकी चार आँखें एक हुई और निहारने लगे एक-दूसरे को तो सहज एक-दूसरे के मन में एक-दूसरे के प्रति आकर्षण हो गया और फ्रेश होने के साथ ही जब नाश्ते में बैठे तो सतीश पद्मा की शिक्षण की जानकारी लेने लगा। साथ ही उस डाइनिंग हाल में सजी हुई पद्मा के हाथ की बनी कलाकृतियां, जिन पर पद्मा का नाम लिखा था, उनको निहारने लगा तो निहारता ही रह गया। वह सोचने लगा कि पद्मा पढ़ी हुई केवल बारहवीं क्लास ही है, पर करती है ग्रेज्युएट लड़कियों को भी मात।

उसकी वचन-माधुर्यता, शिष्टता के साथ यह भी जाना कि नाश्ते में जो-जो आइटम बने हैं वे सब पद्मा की पाककला का ही चमत्कार हैं। सतीश ने ऐसे आइटम जीवन में पहली बार ही खाये थे। सतीश ने पद्मा के धार्मिक क्रिया-कलाप व ज्ञान के साथ नित्य-नियम की जानकारी पायी तो वह सहज उस पर पूर्णरूपेण आसक्त हो गया और मन में भी निश्चय कर लिया कि एक सद्गृहिणी के सारे सुलक्षण मौजूद हैं, ऐसी सद्गृहिणी से ही गृहस्थ जीवन सुखद बन सकता है। बस, इसी निश्चय के साथ उसने बातचीत में यह जानने का प्रयत्न किया कि पद्मा के सम्बन्ध की बातचीत कहाँ चल रही है ? सतीश के मुँह से यह सब सुनते ही पद्मा के माता-पिता एकदम निःश्वास छोड़ते हुए कहने लगे- भाई, क्या बतावें ! यही चिन्ता

दिन-रात हम को सता रही है। आप स्वयं देख रहे हैं और आपके सामने खड़ी है। इतनी देर आपसे बातचीत भी की। आपको इसमें किसी बात की कमी महसूस हुई क्या ? नहीं, कमी तो किसी बात की नजर नहीं आई। एक सद्गृहिणी के सारे लक्षण इसमें मौजूद हैं। मैं तो उसका सौभाग्य मानूंगा कि जिसको ऐसी सुशीला सुलक्षणी धर्मपत्नी मिलेगी। क्या आपने कहीं पर प्रयत्न नहीं किया ? साथ ही इसकी योग्यता का परिचय नहीं कराया ?

पद्मा के पिताजी- भाई सतीशजी, क्या बताऊँ प्रयत्न में मैंने क्या कमी रखी ? शायद ही कोई ग्राम-नगर छोड़ा होगा जहां पर मैंने, मेरे पारिवारिक सदस्यों ने इसके सम्बन्ध के बारे में बातचीत न की हो। पर कहीं घर पसन्द आया तो वर पसन्द नहीं आया और कहीं वर पसन्द आया तो घर पसन्द नहीं आया, कहीं घर-वर दोनों पसन्द आये और उन्होंने पद्मा को देखा तो पसन्द भी आ गई। लेकिन बस, इस दहेज रूप पिशाच ने उनको ऐसा ग्रसित कर लिया कि वे सम्बन्ध स्वीकार करने का आश्वासन देकर गये। लेकिन वापस आज तक स्वीकृति नहीं मिल पायी। कोई तो सीधे अपनी भावना व्यक्त कर देते, तो कोई प्रकारान्तर से लाखों के रूप में। अब आप ही बतायें हम क्या करें ?

हमारी तो इतनी ताकत है नहीं कि हम इनको मुँह मांगा दहेज देकर खुश कर दें। हम अपनी हैसियत के अनुसार ज्यादा से ज्यादा पांच अथवा दस हजार तक का तो जैसे-तैसे

योग बिठा सकते हैं। ऐसा विश्वास दिला दिया लेकिन कोई इसके लिये तैयार ही नहीं होता है। अब आप ही बतायें, क्या उपाय करें ? सतीश पद्मा के माता-पिता की सारी बात सुनकर बोला- वास्तव में आज इन दहेज के लोभी भूखे भेड़ियों ने इस पवित्र जैन समाज को कलंकित करने में कोई कसर नहीं छोड़ी। यदि यही दशा रही तो समाज की क्या दशा होगी ?

इसलिये मेरा तो अब पक्का विचार बन गया कि इस पवित्र समाज की रक्षा हेतु एक नई क्रान्ति का सूत्रपात करना होगा। इसके लिये समाज के कुछ पढ़े-लिखे क्रान्तिकारी युवकों ने कुछ दिन पहले ही स्वयं दहेज लेने का त्याग करके इसके विपरीत क्रान्तिकारी कदम उठाने का निर्णय लिया है। इसलिये फिलहाल इस बात को गुप्त रखकर मैं आपके सामने अपनी भावना व्यक्त करना चाहता हूं कि यदि आप और पद्मा को स्वीकार हो तो मैं बिना किसी दहेज की शर्त के विवाह करने हेतु तैयार हूँ। सिर्फ एक बार मेरे माता-पिता से तो आप परिचित हैं ही, उनकी सन्तुष्टि के लिये जो-कुछ भी आपकी शक्ति है, उतना कर देना। बाकी बाद में देने का आश्वासन दे देना ताकि कोई व्यवधान पैदा न हो। सतीश की यह बात सुनकर सब हर्ष-विभोर हो उठे। क्योंकि उनकी अपने जीवन की यही बहुत बड़ी समस्या, जो दिन-रात उनको व्यथित कर रही थी, जिसके कारण रात-दिन चिन्तित रहते थे। सबने एक ही

स्वर में कहा, हमको आपका सम्बन्ध स्वीकार है। बस, देर है तो आपके परिवार के आगमन की और उनके द्वारा सगाई के दस्तूर की। बस, हमने हमारी सारी परिस्थितियाँ स्पष्ट कर दी हैं। इसके उपरान्त भी आपके दिल में अन्य कोई विचार हो तो अभी अभिव्यक्त कर दें ताकि बाद में आपके जीवन में परस्पर किसी प्रकार की कटुता न आवे। हाँ, यह भी हम स्पष्ट कर देते हैं कि आपकी और पद्मा की पुण्यवानी से हमारी आर्थिक स्थिति सुधर गई तो हम किसी प्रकार की कमी नहीं रहने देंगे। सतीश ने सारी बात सुनकर कहा- देखिये, वैसे तो मैंने आपको सारी बात समझा ही दी है। मेरी तरफ से आप निश्चिंत रहे एवं पूर्ण विश्वास रखें कि मैं सब-कुछ सहन कर लूंगा लेकिन आपकी बिटिया पद्मा को किसी प्रकार का कष्ट नहीं आने दूंगा। बस, अब आप मैंने बताई उस बात को ध्यान में रखते हुए इन्तजार करिये। मैं यहाँ से जाकर मेरे परिवार वालों को सारी बात समझाकर भेजता हूँ ताकि सगाई का दस्तूर विधिवत् हो जाये। फिर पद्मा की अन्तरभावना को टटोल कर उसकी भी सहमति लेने हेतु उसके माता-पिता की आज्ञा प्राप्त करके उसको अपने साथ पास के ही एक उपवन में लेकर गया।

(4)

ज्योंहीं दोनों उस उपवन में पहुँचे, वहाँ के रम्य वातावरण ने दोनों के मनोपवन को भी रम्य बना दिया।

वहाँ पर बने संगमरमर के सिंहासननुमा आसन पर दोनों आमने-सामने बैठ गये। सतीश पद्मा की सौम्य मुखाकृति को निहारते हुए कहने लगा- पद्मा, वैसे तो तुमने तुम्हारे माता-पिता के सामने जो-कुछ बातें हुई, सुन ली होंगी और तुम्हारे माता-पिता के भावों से अवगत भी हो गई होगी। फिर भी तुम भी पढ़ी-लिखी हो, भले सर्टिफिकेट से तुम ग्रेज्युएट नहीं हो, लेकिन तुम कला-कुशलता में ग्रेज्युएट से किसी प्रकार कम नहीं हो और मैं भी ग्रेज्युएट हूँ इसलिये मैं यह अनुभव करता हूँ कि चाहे स्त्री हो या पुरुष, सब को विचारों की स्वतन्त्रता का पूर्ण अधिकार है। किसी पर किसी को अपने विचार थोंपने का या हनन करने का अधिकार नहीं है। हाँ, एक-दूसरे के विचारों को जानकर, उनमें कैसे सामंजस्य बैठ सके, यह उपाय सोचना और उसके अनुसार प्रवृत्ति करना ही जीवन का सार है। यही जीवन जीने के आनन्द का राजमार्ग है।

इसलिये पहली बात तो यह जानना चाहता हूँ पद्मा कि जो-कुछ तुम्हारे माता-पिता के साथ वार्ता हुई उनके निमित्त से तेरे हृदय में मेरे प्रति कुछ स्थान बना या नहीं ? यदि बना तो तुम मेरे से क्या अपेक्षा रखती हो, यह भी दिल खोल कर बता दो ताकि आगे बात बढ़ाने में सम्बल मिले। क्योंकि यह जीवन-भर का साथ है। न इसमें किसी प्रकार की लाग-लपेट और न संकोच की आवश्यता है। सतीश की एक-एक वचनावली पद्मा के मन रूपी उपवन की

कली-कली को खिला रही थी। पद्मा का मन तो ऐसा हर्ष-विभोर हो रहा था कि अभी अपने प्राणेश्वर की बांहों में समा जाऊँ। पर लोक-व्यवहार, धर्मनीति आदि का चिन्तन करते हुए वह केवल अपने चेहरे पर मंद मुस्कान बिखेरते हुए जमीन पर दृष्टि टिका कर ही बैठी हुई थी। लेकिन सतीश के अत्याग्रह ने उसको बोलने हेतु विवश कर दिया। क्योंकि उसकी बोली में ऐसी चुलबुलाहट थी कि सामने वाले व्यक्ति को मुखरित होने हेतु तत्पर कर ही देता। पद्मा भी अति संकुचित होते हुए भी आखिर मुखरित हुए बिना नहीं रही। उसने बड़े विनम्र शब्दों से एक ही बात कही कि आपने मुझे अपने हृदय में स्थान देकर माताजी-पिताजी को बहुत बड़ी चिन्ता से मुक्त किया है। बस, अब तो आपसे मुझे एक ही अपेक्षा है कि मुझे जीवनसंगिनी बनाकर अन्तिम श्वास तक चरणों की दासी बनाये रखें। मेरे से कोई अनाधिकार चेष्टा या गलती हो जाये तो मुझे प्रेमपूर्वक समझाकर उसका परिष्कार करने की कृपा करें और मुझे जीवनभर निभाने की कृपा करें। आपकी खुशी में ही मेरी खुशी और आपके कष्ट में ही मेरा कष्ट समझकर आपकी चरणसेवा में रहकर सुखद जीवन व्यापन कर सकूं, बस यही अपेक्षा है।

यह कह कर उसने चरण स्पर्श किया। सतीश भी उसको पूर्ण आश्वस्त करते हुए कहने लगा- पद्मा ! बस, आज मैं तुझे प्रतिज्ञाबद्ध होकर विश्वास दिलाता हूँ कि अब

मेरे हृदय में तेरे अलावा अन्य किसी का स्थान नहीं बन सकता है। चाहे मुझे अविवाहित ही क्यों न रहना पड़े, बस तुम अपने दिल को विश्वस्त बना लो। मैं घर जाते ही सारी बात व्यवस्थित करके यथाशीघ्र तुम्हारे यहाँ मंगल-संदेश भिजवाने का पूर्ण प्रयत्न करता हूँ। यह कहकर पुनः पद्मा को घर पहुँचाकर सबको प्रणाम करके सतीश रवाना हुआ।

(5)

इधर सतीश को घर पहुँचने में दो-तीन दिन लग गये। इस बीच एक-दो जगह से अपनी पुत्री का सम्बन्ध निश्चित करने हेतु मेहमान घर आकर सतीश के नहीं होने के कारण पुनः देखने हेतु आने का आश्वासन देकर चले गये थे। इस कारण से ज्योंहीं सतीश घर पहुँचा तो माताजी-पिताजी कुछ नाराजगी-सी दिखाते हुए बोलने लगे, क्या बतावें, सतीश तेरे अन्दर तो कुछ अक्ल ही नहीं है। एक छोटे-से काम के लिये भेजा तो वापस आने में इतने दिन लगा दिये और यहाँ सारे किये-कराये पर पानी फिर गया। बड़ी मुश्किल से कितने सगे-सम्बंधी की खुशामद करने पर तो इतने सम्पन्न मालदार व्यक्तियों को तेरे सम्बन्ध हेतु देखने के लिये भेजा। लेकिन तेरे यहाँ नहीं होने से कुछ बात ही नहीं बनी और बिना कुछ उत्तर दिये चले गये। यदि तू यहाँ होता तो अपना भाग्य खुल जाता। क्योंकि उनकी सम्पन्नता को देखते हुए मुझे पूर्ण विश्वास हो गया था कि

दहेज में कम से कम चार-पांच लाख का माल देते ही। पर तेरे यहाँ नहीं होने से सारी बात बीच में ही अटक गई। तब सतीश बोला- पिताश्री, यह तो बहुत अच्छा हुआ जो वे यहाँ से चले गये और यदि मैं यहाँ होता तो भी ऐसा सम्बन्ध कभी स्वीकार नहीं करता और फिर आगे आयेंगे तो भी मुझे यह सम्बन्ध किसी हालत में स्वीकार नहीं होगा। क्योंकि मैं उस परिवार की सारी अन्तरंग स्थिति जानता हूँ। केवल पैसा ही सबकुछ नहीं होता है। पैसा तो पुण्यवानी होगी तो अपने-आप आ जायेगा और पुण्यवानी ही नहीं होगी तो आया हुआ पैसा भी जाने में कोई देरी नहीं लगती है। विवाह के नाम पर पैसे से होने वाली सौदेबाजी धर्म व समाज-परिवार के लिये कलंक हैं। मैं नहीं चाहता कि ऐसा कलंक का टीका लगाकर पैसे की बोलियों से नीलाम होकर विवाह करूँ। मैं तो विवाह ऐसी कुलीन, सुसंस्कारित कन्या से करना चाहता हूँ जो चाहे साधारण परिवार की ही हो पर जिसमें कम से कम एक सद्गृहिणी के अर्थात् श्राविका के गुण हों। इसलिये मैंने अपने निकट जाने-पहचाने सम्बन्धी की सुसंस्कारित पुत्री कुमारी पद्मा का चयन कर लिया है। शादी करूंगा तो उससे ही करूँगा, अन्य से नहीं। चाहे वह करोड़पति की भी बेटी क्यों न हो और दहेज में पांच की जगह दस लाख का माल भी क्यों न दे। यह सुनते ही तो माता-पिता सबका पारा गरम हो गया और बोलने लगे- उस भुक्खड़ से हमें क्या प्राप्त होने वाला है ? कहाँ हमने

कितना धन खर्च करके पाला-पोसा, बड़ा किया और पढ़ा-लिखा कर होशियार किया कि बस विवाह होने पर सारा तेरे पीछे खर्च किया गया धन दस गुना होकर घर में आ जायेगा पर तूने तो हमारे सब अरमानों पर पानी फेर दिया। माता-पिता की ये बातें सुनकर सतीश ने बड़ी धैर्यता से कहा- पिताश्री, आप इतने धर्मात्मा, नित्य सामायिक-प्रतिक्रमण करने वाले एक अच्छे श्रावक कहला कर आपके मन में धन की इतनी लालसा ! इतनी आसक्ति ! बड़े आश्चर्य की बात है। यदि आपको इतना ही धन प्यारा हो तो मुझे बेचकर पूर्ति कर लीजिये। लेकिन विवाह जैसे जीवन के मंगलकारी प्रसंग के नाम पर तो अपने-आपको नीलाम नहीं करा सकता। यदि ऐसा हुआ तो मैं कुंवारा रहकर देश, समाज, राष्ट्र की सेवा करके या संयम लेकर आत्मकल्याण कर लूंगा पर दहेज के नाम पर बिकूंगा नहीं। मैंने यह समझ लिया है कि विवाह कोई गुड़िया-गुड्डे का खेल नहीं। यह जिन्दगी का महत्त्वपूर्ण कदम है। जिन्दगी धन-वैभव से ही सुखमय नहीं बन सकती। उसके लिये आवश्यक है सद्संस्कार, सद्विचार वाली जीवनसंगिनी और वे सब पद्मा में मौजूद हैं। इसलिये मेरा आपसे निवेदन है कि आप पैसे का ममत्व गौण करके वहाँ समाचार भेज दीजिये ताकि वे यहाँ आकर सगाई का दस्तूर कर लें जिससे समाज में आपके आदर्श श्रावक की छाप बनी रहे और हमारे परिवार में भी सुख-शान्ति की बहार बहती रहे। यह मेरा आपसे नम्र निवेदन है।

(6)

सतीश की इस यथार्थ बात को सुनकर माता-पिता ने भी गहन चिन्तन किया और आखिर इसी निर्णय पर पहुँचे कि सतीश के अन्तःभावों के अनुरूप यह सम्बन्ध करना ही श्रेयस्कर है। ऐसा चिन्तन करके पद्मा के पिताजी को समाचार करा दिये। समाचार मिलते ही सारे परिवार में हर्ष की लहर व्याप्त हो गयी और शुभ मुहूर्त देखकर अपने अति निकट के दो-चार सदस्यों को साथ लेकर पहुँच गये। पद्मा के पिता ने बड़े हर्षोल्लास के साथ सगाई का दस्तूर कर दिया व साथ ही विवाह की तिथि भी निश्चित करके अपने घर चले गये और करने लगे विवाह की तैयारी। इधर विवाह की तिथि नजदीक आने के साथ ही सतीश के परिवार वाले भी बड़ी धूमधाम से बारात सजा कर पहुँच गये। वहाँ इस शुभ समाचार के मिलते ही तो पद्मा के माता-पिता परिवार ने बारात में पहुँचने वालों के स्वागत में पलक-पांवड़े बिछा दिये, जिसको देखकर सभी बारातियों के मुँह से एक ही आवाज निकली कि सतीश के शादी में जैसा आनन्द आ रहा है वैसा तो बड़े-बड़े करोड़पतियों की शादी में भी नहीं आया। कैसी इस परिवार की शालीनता और आवभगत। भले आइटम का अथवा डेकोरेशन का फिजूल दिखावा कम हो, पर इनकी मान-मनुहार, इनकी वचन-माधुर्यता तो वास्तव में आदर्श ही है। इस प्रकार बड़े

खुशी के माहौल में विवाह की रस्म पूरी हुई। सतीश के विचारानुसार जो-कुछ भी प्रीतिदान पद्मा को दिया गया वह सब बिना किसी दिखावे के साथ पेटी बन्द करके दिया गया। साथ ही सतीश के पिताजी को बड़ी विनम्रता के साथ पद्मा के पिताजी ने आभार मानते हुए कहा- मैंने अपनी प्यारी बिटिया पद्मा को मेरी शक्ति के अनुसार प्रीतिदान दिया और आपके पुण्य-प्रताप से ज्योंहीं मेरी आर्थिक स्थिति में कुछ सुधार हुआ तो कम से कम पांच-दस हजार का माल बाद में देने का भी आज वायदा करता हूँ। बस, आपसे यही नम्र निवेदन है कि मेरी प्यारी बिटिया को आप पैसे से न तोलें। इसका मूल्यांकन गुणों से करें। यह बात पहले ही कंवर साहब के सामने भी सारी रख दी, उसके पश्चात् ही इनकी पसंदगी के आधार पर ही यह सम्बन्ध जोड़ा गया है। आप इसको अपनी बेटी मानकर पूरा स्नेह दें। यह कहते-कहते उनकी आँखों से अश्रु प्रवाहित होने लग गये। उन्हीं अश्रु प्रवाहित नयनों से पद्मा को भी विदाई देते हुए कहने लगे- बेटी पद्मा ! अब तेरे लिये हमारी जगह माता-पिता यही हैं और वह घर और परिवार ही तेरा है। यही मानकर पूर्ण स्नेह भाव से रहना। कोई ऐसा काम मत करना जिससे इनको कष्ट हो। सबके साथ बड़े विनय भाव से रहना। सबका आदर करना और हर समय सेवा में तत्पर रहना। धार्मिक प्रवृत्तियों में भी सजग रहना। साधु-संतों की व साधर्मियों के साथ अपने आने वाले मेहमानों की

यथायोग्य पूरी सेवा करना। अड़ौसी-पड़ौसी से भी हिलमिल कर रहना। अपने घर की दुःख- सुख की बात घर से बाहर मत जाने देना। बस, और ज्यादा क्या कहूं। बिटिया, दोनों कुलों की इज्जत रखना अब तेरे हाथ है। तू स्वयं समझदार है, तेरे से आशा ही नहीं, पूर्ण विश्वास है कि तेरे निमित्त से हमको किसी प्रकार का उपालम्भ नहीं सुनना पड़े, बस इसी शिक्षा के साथ यही मंगलमय कामना करते हुये विदाई देते हैं कि तुम्हारा गृहस्थ जीवन मंगलमय हो। ऐसा कहते हुये माता-पिता व परिवार के सभी सदस्य भी फफक-फफक कर रोने लगे। तब सतीश व उनके पिताजी आदि ने पारिवारिक सदस्यों को सांत्वना देते हुये विदाई ली। बारात पुनः रवाना होकर अपने ग्राम पहुंच गयी।

(7)

शुभ वेला में मंगल गीतों की गुंजार के साथ गृहप्रवेश कराया गया। पद्मा ने गृहप्रवेश करते ही बड़ी विनम्रता के साथ सास-ससुर, सगे- सम्बन्धियों के चरण स्पर्श कर आशीर्वाद लिया। जिसने भी पद्मा को देखा तो पद्मा की सौम्यता, नयनों की लज्जा, विनयशीलता, वचनों की माधुर्यता से हार्दिक प्रसन्नता की अनुभूति करते हुये सतीश के निर्णय की सराहना करने लगे। साथ ही उसके साथी-स्नेही भी उसके क्रान्तिकारी आदर्श, समाज सुधार के इस कदम की भूरि-भूरि प्रशंसा करने लगे। जिसके

अनुकरण हेतु कई युवक-युवतियों में एक नया जोश, नई उमंग पैदा होने लगी। लेकिन सतीश के माता-पिता इस विवाह से जैसा चाहिये, वैसे खुश नहीं थे। परन्तु जब पद्मा की विनयशीलता, कार्यकुशलता, वचन-माधुर्यता, व्यवहारकुशलता देखी तो उनके मन में भी हर्ष की लहर व्याप्त हो गयी और पद्मा के आगमन को अपना सौभाग्य मानने लगे। धीरे-धीरे पद्मा ने भी अपने उपरोक्त गुणों के आधार पर उनके हृदय में स्थान बना लिया। फिर भी जब आस-पड़ोस में किसी लड़के की शादी होती और उनके घर में दहेज का दिखावा होता तो वे अपने-आप को संवृत नहीं रख पाते। उनके मन में पुनः दहेज प्राप्ति की धुन लग जाती और उनकी दृष्टि अपने छोटे पुत्र राकेश पर टिक जाती कि बस, अब इसकी शादी तो ऐसे परिवार में ही करनी है जहाँ से दोनों की कसर निकल जाये। इसलिये वे उसमें अभी से धन के प्रति आकर्षण पैदा करने लगे और ऐसी-ऐसी बातें करने लगे जिसके कारण राकेश के मन में भी पैसे के प्रति इतना लगाव पैदा हो गया कि मानो पैसा ही परमेश्वर है। उसी से जीवन की महत्ता है, जितना जिसके पास पैसा है, उतनी ही उसकी पूजा-प्रतिष्ठा है। इसलिये राकेश का अब एक ही लक्ष्य बन गया कि येन-केन-प्रकारेण पैसा कैसे प्राप्त हो। इसलिये वह रात-दिन ऐसे ही हथकंडे करता रहता जिससे कि पैसा अधिक से अधिक प्राप्त हो। चाहे उसके लिये कितनी ही अन्याय-अनीति भी क्यों नहीं करनी पड़े।

फिर ऐसे व्यक्तियों की कमी भी नहीं होती। ऐसे व्यक्तियों को चतुर, होशियार, इन्टेलीजेन्ट के सर्टिफिकेट की भी जरूरत नहीं होती। बस, फिर तो राकेश का क्या कहना, हम चौड़े और बाजार संकड़े की कहावत चरितार्थ होने लगी। उसकी इस तारीफ को सुनकर कई पूंजी वाले अपनी पुत्री की सगाई करने हेतु आने लगे। तब माता-पिता की धन प्राप्ति की लालसा भी द्विगुणित हो उठी और एक धनी परिवार की लड़की के साथ सगाई का दस्तूर करके शादी की तिथि भी निश्चित कर दी। जब तिलक की रस्म अदा हुई तो आने वाले वस्त्राभूषण, नगदी इत्यादि देखकर तो उनकी आंखें ही चौंधिया गई। शादी होने के बाद आने वाले दहेज को देखकर तो माता-पिता का राकेश और उसकी पत्नी प्रभा के प्रति इतना अनुराग हो गया कि मानो घर में लक्ष्मी का अवतार ही आ गई हो। अब तो पद्मा उनको घर की एक दासी से भी गई-बीती लगने लग गई। हालांकि पद्मा के सद्गुणों के सामने प्रभा पद्मा के नाखून की भी होड़ नहीं कर सकती थी फिर भी जैसे पीलिये के रोगी को सब पीला ही पीला दिखता है इसी प्रकार माता-पिता को प्रभा स्वर्ण-प्रभा ही परिलक्षित होने लगी। प्रभा भी कम नहीं थी। उसने घर में आते ही सबसे पहले बड़ी होशियारी से अपने पीहर से आने वाले वस्त्राभूषण, सारा सामान अपने कमरे में व्यवस्थित करके कब्जा कर लिया। अपनी वाक्पटुता से सास-श्वसुर व सारे घर पर अपना आधिपत्य

जमाने लगी। साथ ही राकेश को भी हर समय यही प्रेरणा देती जिससे वह भी दुकान पर अपना आधिपत्य जमाने लग गया। जिससे वह हर समय ऐसे ही अड़ंगे लगाने लग गया कि किसी प्रकार सतीश का पैर यहाँ न टिके। वह यों तो था पूरा भोंदू, न बोलने का भान, न रहने का भान, फिर भी माता-पिता ने उसके ससुराल से आने वाली नई-नई भेंट में आसक्त होकर, तारीफ के पुल बांधकर, उसको इतना ऊँचा चढ़ा दिया कि अब तो उसके धरती पर पांव ही नहीं टिकने लगे। उसकी दृष्टि तो बस आकाश में ही मंडराती रहती। ससुराल से आने वाले धन को देखकर तो उसका मन ही उन्मत्त बन गया जिससे अपने सामने अन्य को तो वह एकदम तुच्छ ही समझने लग गया। सतीश को बिना पैसे के एक घरेलू नौकर से भी गया-बीता समझने लग गया। स्नेही साथियों में जो भी उसकी तारीफ या जी-हजूरी करते, उनके अलावा किसी को कुछ समझता ही नहीं था। बेचारे सतीश का हाल ही बेहाल हो गया। बात-बात में रौब दिखाता, हंसी उड़ाता, सगे-सम्बन्धियों अथवा दस-पांच व्यक्तियों के बीच मजाक उड़ाना, व्यंग्य कसना तो अब एकदम सामान्य-सा हो गया था। फिर भी सतीश राकेश की नादानी पर मुस्करा कर चुप हो जाता। लेकिन उसकी सहनशीलता का राकेश नाजायज लाभ उठाकर ज्यादा उद्धण्डता दिखाने लगा। आखिर सहनशीलता की भी हद होती है। कहाँ तक व्यक्ति सहन करे। आखिर वह

भी तो इंसान ही था। राकेश की उद्दण्ड वृत्ति बढ़ती देखकर एक-आध बार उसे टोक दिया तो और ज्यादा उद्दण्ड बनकर पेश आया और अंटसंट बकता हुआ बेलगाम होकर कहने लगा- खबरदार, चुपचाप बैठ जा। मुझे कुछ भी कहने की जरूरत नहीं। मुझे कुछ कहने से पहले अपनी औकात को तो देख कि क्या लाया अपने ससुराल वालों से, जो रौब जमा रहा है।

तेरे को यहाँ रहना है तो रह, नहीं तो चला जा यहाँ से। यहाँ साथ में रहना है तो मेरे कथनानुसार ही चलना होगा क्योंकि दुकान में पूंजी मेरी लगी है। मैंने अपने ससुराल से आयी पूंजी को लगाकर व्यापार बढ़ाया है। इस प्रकार राकेश के कटु व हृदय को भेदने करने वाले मर्मकारी वचनों को सुनकर भी सतीश पूर्ण खामोशी धारण करके बैठ गया और सोचने लगा- क्या करूं, कहूँ तो किसको कहूँ, सुने भी तो कौन ? माता-पिता तो स्वयं उसके कंट्रोल में हैं। हर बात में वे उसका पक्ष ले लेते थे। इसी कारण तो उसकी उच्छृंखलता बढ़ती जा रही थी।

(8)

इधर पद्मा की हालत उससे भी ज्यादा खराब थी। सासूजी राकेश की पत्नी के आने के बाद तो पूरी उसके वश में हो गयी। प्रभा उनको वश करने के लिये पीहर से जो कपड़े आते उनमें से एक-दो ड्रेस सासूजी को भेंट करती

और ऊपर से बड़ी मीठी-मीठी बातें बनाकर पद्मा के प्रति भड़काती रहती। जिसके कारण पद्मा को घर की एक साधारण दासी से गई-बीती समझकर कटु वचनों के तीरों की बौछार करने में कसर नहीं रखती। कितना ही अच्छा काम करो, उसमें कुछ-न-कुछ नुक्स निकालकर घर में बवंडर खड़ा कर देती और बात-बात में कहती रहती- तेरे माँ-बाप ने ऐसा ही सिखाया क्या ? देख छोटी बहू को। कहाँ वह और कहाँ तू ? उसके घर में आते ही सारा घर चमन-सा हो गया। यह देख घर में टी.वी. सैट, सोफा सैट, फोन, पंखा इतनी बड़ी-बड़ी अलमारियाँ। सारा घर कैसा सज गया और एक तू। क्या लेके आई अपने पीहर से ? और तो दूर, पद्मा का अच्छा खाना-पहनना भी उसको फूटी आँख नहीं सुहाता। कभी अच्छी साड़ी पहन लेती तो बस, वचनों के तीखे तीरों की बौछार में कोई कमी नहीं रखती। अहो देखो ! बड़ी आई है करोड़पति की बेटी। खाया कभी ऐसा, पहना कभी ऐसा अपने बाप के घर में ? इस प्रकार प्रतिदिन ऐसे तानों की बौछार से पद्मा का खिन्न होना स्वाभाविक था। फिर भी उसने पूर्ण धैर्यता रखकर कभी सासूजी का प्रतिकार करने का प्रयत्न नहीं किया। उल्टी हमेशा यही प्रयत्न करने की कोशिश करती रहती कि वे कैसे खुश रहें। साथ ही मेरी तरफ से किसी को कोई कष्ट न हो। यहाँ तक कि वह इस के बारे में आस-पड़ौस को तो दूर, सतीश को भी कभी बताने की कोशिश नहीं करती।

वह सोचती, उनको भी तो मेरे कारण रात-दिन कितने ताने सुनने पड़ते हैं। इसलिये उनको इस गृहकलह की भट्‌टी में क्यों झोंका जाय और न कभी पीहर वालों को भी इसका एहसास ही होने दिया। सब कुछ धैर्यतापूर्वक सहन करती हुई अपना आत्म-चिन्तन करते हुए महामंत्र का शरणा लेकर अपने कर्तव्य का पालन करने के लिये तत्पर रहती थी। इस बीच पीहर से लेने हेतु आ गये और सास-ससुर से बहिन को भेजने का आग्रह करने लगे। लेकिन पहले तो वे आना-कानी करने लगे। आखिर बहुत अनुनय-विनय करने पर भेजने हेतु तैयार हुये। तब पद्‌मा उनकी अनुमति पाकर तैयार होने लगी। यह सोचकर कि अब इनकी क्या हालत होगी, मन में सतीश की विरह-व्यथा सताने लगी। परिवार का कोई सदस्य इनके साथ आत्मीयता दिखाकर भोजन आदि के लिये पूछने वाला नहीं था। उनके ऊपर भी दिन-भर मेहनत करने पर भी ऊपर से तानों की होने वाली बरसात उनके मन को कितना व्यथित कर देती है। तब जैसे-तैसे मैं इनके मन को बहला देती। परन्तु मेरे जाने के बाद इनको कौन खुश करेगा ? इनके सुख-दुःख की बात को कौन सुनेगा ? इधर सतीश का मन भी अंदर ही अंदर व्यथित था, पर विवशता थी। लेकिन व्यवहार के नाते दोनों ने अपने-अपने मन को समझा कर विदाई ली। पद्‌मा कमरे से अपना सामान लेकर नीचे आई। सासूजी व ससुरजी के चरणों में नमन करके अपराधों की क्षमायाचना करते हुये

जाने की अनुमति मांगी। तब सासूजी कहने लगी- तू पीहर जा तो रही है लेकिन याद रखना, मेरे घर की कोई ऊँची-नीची बात वहाँ की और किसी से सुनने में आयी तो तेरी खैर नहीं है। साथ ही तेरे पिताजी ने जो रकम बाद में देने का वायदा किया, वह भी लाना मत भूलना। उस बात को अब इतना समय हो गया है, इस बात का पूरा ध्यान रखना। नहीं तो तेरे लिये हितकर नहीं होगा। पद्मा बिचारी सासूजी के ये विष-तुल्य वचनों के तीर सहन करने के अलावा कर ही क्या सकती थी और कोई उपचार भी नहीं था। इसलिये चुप रहना ही उचित समझकर सासूजी के चरण छुये और भाई के साथ पीहर जाने के लिये रवाना हो गयी। सतीश स्टेशन तक पहुंचाने आया था। ज्योंहीं ट्रेन आयी, उसमें बिठाकर उसके रवाना होते ही मन मसोस कर घर आ गया।

(9)

ज्योंहीं पद्मा पीहर पहुँची, सबको देखकर बड़ी प्रसन्न हुई। साथ ही, आस-पड़ौस जिसने भी सुना, सब पद्मा से मिलने आने लगे। सखी-सहेलियाँ तो प्रसन्नता से झूम उठी और मिलकर उसके ससुराल के अनुभव जानने हेतु बड़ी उत्सुकता से प्रश्नों की झड़ियां लगाने लगी। सास, श्वसुर, देवर, देवरानी, ननद आदि के साथ उसके पति सतीश के बारे में भी जानकारी करने लगी। लेकिन पद्मा ने पूर्ण गम्भीरता के साथ सबका यथायोग्य समाधान करते

हुये किसी को इतना भी महसूस नहीं होने दिया कि उसने अपने ससुराल में कितने कष्ट सहन किये। साथ ही परिवार के सदस्यों को भी कभी इसकी भनक नहीं पड़ने दी।

पीहर के स्नेहिल वातावरण में पद्मा के दिन हंसी-खुशी में व्यतीत हो रहे थे। किधर दिन निकले, कुछ महसूस ही नहीं हो रहा था फिर भी जब पद्मा कभी एकान्त में होती तो पतिदेव सतीश की स्मृति उभरते ही तो उसका चेहरा गमगीन हो जाता। उसके मन में अनेक तरह के विचार तूफान मचाने लगते, यह सोचकर कि वे किस प्रकार घर में दिन व्यतीत करते होंगे। जब राकेशजी अवज्ञा करते होंगे, माता-पिता व्यंग्यबाण कसते होंगे, तब उनके उद्विग्न मन को कौन सहलाता होगा ? कौन उनको धैर्य बंधाता होगा ? खाना भी टाइम से खाते होंगे या नहीं ? आदि अनेक तरह की कल्पनाओं से सतीश की यादों में मन इतना गमगीन हो जाता कि कभी-कभी उसकी आंखों से अश्रु प्रवाहित हो जाते और सोचती अब लेने आ जावे तो ठीक रहे। फिर थोड़ी देर बाद सखी-सहेलियों के मिलते ही वह उन सब चिन्ताओं से उन्मुक्त होकर सहज बनकर सखियों व पारिवारिक सदस्यों के साथ घुलमिल जाती। इधर सतीश का हाल तो बेहाल ही था। पद्मा के पीहर जाने के बाद जब वह अपने कमरे में आता और अपनी खाली पड़ी सुखशय्या देखता तब उसको जीवन में शून्यता की अनुभूति होती।

उसके मन को रह-रह कर पद्मा की याद व्यथित

करती रहती। नींद में भी पद्मा को स्वप्नों की रानी बनाकर ही समय व्यतीत करता। फिर भी इस मन की व्यथा को मन में ही दबाकर दिन-भर दुकान के काम में व्यस्त रहते हुये समय पूरा कर देता। फिर शाम को कुछ समय खा-पीकर यार-दोस्तों के साथ बातचीत में व्यतीत कर देता। फिर कुछ धार्मिक उपन्यास, कथा-कहानी पढ़ते-पढ़ते सो जाता और प्रातः होते ही उसी उपक्रम में जुट जाता।

परन्तु सबसे बड़ी व्यथा तो उसको यह थी कि दिन-रात कड़ी मेहनत के बाद भी परिवार वाले उसकी कुछ भी कद्र नहीं करते। खाना खाया या नहीं खाया, यह भी नहीं पूछते। यहाँ तक कि एक दिन तेज बुखार चढ़ गया तो भी किसी ने कुछ भी खबर नहीं ली। आखिर अपने-आप थोड़ा बुखार कम पड़ते ही खुद ने ही उठकर दवा ली और होटल पर जाकर चाय-नाश्ता किया। भोजन करने जब भी घर जाता तो वहाँ भी भोजन तो बाद में सामने आता उसके पहले ही माँ के तानों के विषभरे तीर सुनने को मिलते। खाना-पीना सारा जहर बन जाता, कभी पद्मा को लेकर तो कभी उसके माता-पिता को लेकर। फिर भी मन को मजबूत बनाकर भावे नहीं भावे तो भी थोड़ा-बहुत खाकर दुकान पर जाता तो वहां भी राकेश अपनी उद्दंडता से बाज नहीं आता। न दुकान पर बैठता, न किसी काम में सहयोग देता। यदि सतीश कुछ कह देता तो फिर इतना भारी हंगामा मचा देता कि बस, पूछो मत। फिर भी सतीश मन मारकर अपने काम में जुटा रहता।

लेकिन आखिर सहन करने की भी हद होती है। व्यक्ति कितना सहन करे। एक दिन तो थोड़ी-सी बात पर राकेश ने इतना तूफान मचा दिया कि सतीश का वहाँ एक मिनट बैठना भी भारी हो गया। आखिर वहाँ से उसको उठना ही पड़ा। वह उठकर अपने कमरे में गया और चिंतन करने लगा। अब ऐसे जीवन कैसे निर्वाह होगा ? सवेरे उठते प्रतिदिन ही क्लेश, न सुख से खा सकना, न सुख से सो सकना। हर समय परतन्त्र बनकर रहना पड़ता है। साथ ही मेरे से भी ज्यादा पद्मा की हालत तो बहुत बुरी बनी रहती है। वह बेचारी एक दासी की तरह सारे दिन कामकाज में जुटी रहती थी फिर भी एक पल भी शान्ति नहीं मिलती। यहाँ तक कि उसका खाना-पीना भी इनको खटकता रहता है। फिर भी वह बड़ी धैर्यशालिनी। जिसने इतने कष्ट उठाकर भी कभी आस-पड़ौस को तो दूर, मेरे सामने भी उसने जिक्र नहीं किया। पर मैं तो सब देख रहा था कि इस घर में आने के बाद उसने क्या सुख पाया ? शादी के पहले उसके चेहरे पर जो तेज-ओज और सौम्यता देखी, वह यहाँ आने के बाद सारी लुप्त हो गयी और राकेश की शादी के बाद तो उसका जीना भी हराम हो गया। यह तो ठीक हुआ जो उसका भाई आया और पीहर लेकर चला गया ताकि कुछ दिन तो वहाँ शान्ति मिलेगी। पर यहाँ आते ही तो फिर वही स्थिति होगी। इसलिये पद्मा नहीं आवे उसके पहले ही कुछ व्यवस्था कर लेनी चाहिये। जिससे भले ही दाल-रोटी ही

मिले, हम दोनों का जीवन तो सुख से यापन होगा। यह सोचकर उठा अपनी शैय्या से और कपड़े पहन करके घर से निकल कर सीधा पड़ौस के गाँव में गया और वहीं अपना जो मकान था उसकी साफ-सफाई की और उसी में बनी दुकान को साफ करके अच्छा मुहूर्त देखकर छोटा-मोटा व्यापार प्रारम्भ करने का निश्चय किया। सामान लाया और व्यापार चालू कर दिया। अब दिन-भर वहीं रहता और शाम को घर आ जाता और घर का वातावरण अच्छा देखता तो खाना खा लेता, नहीं तो होटल में खाकर कमरे में सो जाता।

(10)

इधर पद्मा को पीहर गये महीना-भर हो गया। तब सतीश ने सोचा- अब पद्मा को ले आना चाहिये ताकि बाद में धीरे-धीरे सारी व्यवस्था जमाकर वहीं निवास कर लेंगे। ऐसा विचार करके सतीश अपने ससुराल गया और एक-दो दिन रहकर पद्मा को लेकर आ गया। लेकिन उसने अभी पद्मा को अपना विचार नहीं बताया और प्रतिदिन के क्रम से सुबह गांव में जाता और शाम को वापस आ जाता है। न पद्मा ने इस बात को जानने की कोशिश की और न सतीश ने बताया। इस बीच एक दिन पद्मा एक तरफ बैठकर कुछ कार्य कर रही थी कि अचानक उसकी सासू पद्मा के पास आयी और मटके करती हुई बोली कि तुम पीहर में इतने दिन मौज उड़ाकर आ गई पर मैंने जाते समय जो बात

कही थी, उसका क्या हुआ ? तुम्हारे बाप ने बाद में जेवर देने का वायदा किया वो लेकर आई क्या ? सासूजी के ये वचन सुनते ही उस पर मानो पहाड़ टूट पड़ा हो, ऐसा अनुभव होने लगा। फिर भी उसने धैर्यता धारण करके मौन साध ली। पद्मा की मौन भी सासूजी की क्रोधाग्नि में घी का कार्य कर गयी और सासुजी भभकती हुई कहने लगी- बोल क्या हुआ ? अब मौन क्यों धारण कर ली ? क्या जबान को लकवा मार गया ? आखिर बेटी तो उसी बाप की है जो लेना-देना तो कुछ नहीं, केवल लोगों के सामने झूठी वाह-वाही लूटने हेतु बातें तो बड़ी-बड़ी की कि मैं मेरी बेटी को बाद में इतना और दूंगा। और आज शादी को इतना समय हो गया लेकिन देने का नाम नहीं। कहाँ राकेश के ससुराल वाले और कहाँ तेरे पीहर वाले।

सासूजी के इन वचनों को सुनकर उसका हृदय फटने लगा। उसकी आँखों में अंधेरा छाने लगा। मानो पांव तले जमीन खिसक रही हो। फिर भी दूसरे ही क्षण सम्भल कर बड़े मधुर शब्दों में सासूजी को कहने लगी। सासूजी, आपकी बात मैं भूल गई, ऐसी कोई बात नहीं है। वह तो मुझे अभी भी पूरी याद है। सिर्फ बात इतनी ही है कि यहाँ से जाने के बाद वहाँ जाकर मैंने सारा हाल देखा तो मेरी कहने की हिम्मत नहीं हुई। क्योंकि वैसे तो पहले ही उनकी आर्थिक स्थिति ऐसी कोई सुदृढ नहीं है। बस, इतना जरूर था कि अपने परिवार का पोषण कर लेते। इधर जब मैं बड़ी हुई तो

परेशानी और बढ़ गयी। वे हर समय इसी चिंता से चिन्तित रहते थे कि कैसे सम्बन्ध होगा और कैसे विवाह की गाड़ी पार पड़ेगी। लेकिन सौभाग्य से उनको आप जैसे रात-दिन के परिचय वाले खानदान का सम्बन्ध मिल गया। जिससे उनको कुछ आत्मसन्तुष्टि हुई। फिर भी उन्होंने आपके पुत्र के सामने ही सारी स्थिति स्पष्ट रूप से रख दी। इसके बावजूद भी मेरे पर माता-पिता भाई आदि का अथाह स्नेह होने के कारण और घर में पहला काम होने के कारण उन्होंने अपनी शक्ति से ज्यादा, यहाँ तक कि कर्ज लेकर विवाह में खर्च किया। साथ ही शक्ति के अनुसार आपको दिया। इसके उपरान्त भी आपकी भावना एवं पोजीशन को ध्यान में रखकर कुछ जेवर बाद में देने का वादा किया। इसके लिये भी उनके हृदय में किसी प्रकार का अन्यथा विचार नहीं है। निश्चित रूप से उनकी देने की पूरी भावना है। सिर्फ देर है तो स्थिति में सुधार आने की। यदि अन्तराय टूटे और आर्थिक स्थिति में सुधार आवे तो उन्होंने जितना देने को कहा है उससे भी अधिक देने की भावना रखते हैं। आप अपने हृदय में थोड़ा धैर्य रखिये। फिर भी विचार कीजिए कि उन्होंने इतना दिया और देने की भावना रखते हैं। तो भी कदाचित स्थिति में सुधार न आवे, व्यापार में घाटा-नफा या उतार-चढाव भी आजावे जिसके कारण देने की भावना होते हुये भी नहीं दे सके तो अपने यहाँ क्या फरक पड़ने वाला है। यदि ऐसा ही हो गया तो मैं एक जेवर कम पहनूँगी,

इससे और ज्यादा हो तो आपके यहाँ का जो जेवर मुझे दिया है, वापस ले लेना। और यदि इतने पर भी सन्तोष नहीं तो यह लीजिये आपके जेवर। ऐसा कह पद्मा ने उसी समय सब जेवर उतारकर सासूजी को सौंप दिये। साथ ही निवेदन किया कि बस, मेरी इतनी सी अर्ज है कि इतनी-सी बात के लिये सगे-सम्बन्धियों में विषभरे तीर छोड़ कर उन सम्बन्धों को विषाक्त न बनावें। पैसा ही सब-कुछ नहीं होता है, यह तो आज है, कल जाते देर नहीं लगती। आखिर दुःख-सुख में सगे-सम्बंधी एक-दूसरे के काम आते हैं। आज तो हमारे यहाँ पैसा है, कल नहीं हो तो जीवन थोड़े ही समाप्त हो जाता है। धन-वैभव चाहे कितना ही हो, न कोई साथ ले गया है और न कोई ले जायेगा। बड़े-बड़े राजा महाराजाओं के भण्डार, कोट-कांगरे, महल सब यहीं पड़े रह गये। साथ में एक कफन का टुकड़ा ही गया। कृष्णा जैसे तीन खण्ड के स्वामी, उनको तो वह भी नहीं मिला। साथ में ले गये तो पुण्य, पाप या किया हुआ धर्म ही। लेकिन आज दुःख इस बात का है कि दुनिया में व्यक्ति की कोई कदर नहीं, चाहे वह कितना ही समझदार, विनयवान और सुख-दुःख में सहायक हो। यदि पैसा पास में हो तो गये से गये-बीते खानदान का, कुलक्षणी, कुरूप, अनपढ़ और निरा भौंदू ही क्यों न हो उसकी दुनिया में तूती बोलती है और वह प्यारा लगता है और दुनिया उसी का आदर करती है। लेकिन याद रखिये, यहाँ न्याय है, अन्याय नहीं। आखिर जीवन में

सुख-शान्ति, आनन्द तो न्याय-नीति से स्वयं के पुरुषार्थ द्वारा कमाया हुआ धन देगा, पराई पूंजी कितने दिन साथ निभाने वाली है ? पराई आशा रखने वालों को आखिर हाथ मल-मल रोना-पछताना ही पड़ता है। इसलिये मेरी तो आपसे विनम्र प्रार्थना है कि आप इस बात को लेकर प्रेम-स्नेह के वातावरण को विषाक्त न बनावें ताकि हमारे घर में सुख-शान्ति का वातावरण बना रहे और जो पूर्वजों की इज्जत बनी है उस पर कोई कलंक न लग जाये।

(11)

हालांकि उस रोज सारी बातें पद्मा ने बड़ी शिष्ट व मिष्ट भाषा में कही थी, साथ ही यथार्थ व बड़ी विनम्रता से भी, लेकिन चाहे कितना ही ठण्डा क्यों न हो, पर आग तो अपने स्वभावानुसार भभकाती है। ठीक यही हाल पद्मा के उन मधुर, विनम्र, शिष्ट, मिष्ट वचनों का सासूजी के लिये हुआ। वे तो इन बातों को गहराई से लेकर सोचना तो दूर रहा, वे तो उलटा काली नागिन की तरह भड़क उठी और जोर-जोर से चिल्लाती हुई बकने लगी। बस, रहने दे तेरी इन बातों को, बड़ी आई मुझे शिक्षा देने वाली।

ऐसी शिक्षा तेरे माँ-बाप को पहले दे देती जो केवल लोगों के सामने बातें ही करके वाह-वाही लूटना जानते हैं। जब से तू मेरे घर में आई है तब से सारे घर में अशान्ति ही अशान्ति फैल गई। न मालूम तेरी माँ ने क्या खाकर पैदा

किया। आखिर माँ-बाप जैसे होते हैं वैसे ही तो संस्कार सन्तान में आते है जैसे कहावत है-

घड़े जैसी ठीकरी, माँ जैसी डीकरी।

यदि घर की ताकत नहीं थी तो बेटी पैदा क्यों की और पैदा की तो जन्मते ही क्यों नहीं मार दिया मेरे घर में तो अशान्ति नहीं होती और न ये दुख देखने पड़ते। क्या करूँ, मेरे ही भाग्य की बात है। सतीश के लिये तो बड़े-बड़े सम्पन्न घराने के सम्बन्ध आ रहे थे लेकिन वो भी न मालूम किस कर्मयोग से तेरे मोह चक्कर में आ गया और तूने भी उस पर न मालूम कैसा जादू-टोना कर दिया कि वह तेरे वश में हो गया। सब सम्बन्धों को ठुकरा कर तेरे पर आसक्त हो गया। इस प्रकार सासूजी के विषभरे आक्रोशमय वचनों की बौछार होने से पद्मा का मन उद्विग्न हो उठा। वह वहाँ से उठी और कमरे में चली गई और अपने भाग्य को कोसती हुई जोर-जोर से फूट-फूट कर रोने लगी। पर उसका रोना कौन सुने ? कौन उसको सहलावे ? किसको उससे लगाव था ? वहाँ तो सबके दिल में पैसे से ही लगाव था। वे तो सब पैसे को ही परमेश्वर मानकर उसी के नशे में उन्मत्त बने रहते। कुछ देर रोने से उसका मन थोड़ा हल्का पड़ा लेकिन उसके मन में दुष्ट विचारों की बिजली कड़कने लगी और चिंतन करने लगी वाह रे पैसे ! कैसी तेरी करामात है ? तूने दुर्गुणियों को ही पूजाया है और गुणियों को तो सदा रुलाया ही रुलाया है। पर याद रख, तेरी महिमा दुराचारी से दुराचारी ही गा सकते

हैं, वे ही तेरे से लगाव रख सकते हैं और तुझे परमेश्वर मानकर तेरी पूजा कर सकते हैं, पर सदाचारी कभी नहीं। चाहे उनको मौत का आलिंगन ही क्यों न करना पड़े। बस, अब मैंने भी यही निश्चय कर लिया है कि जहाँ पैसे की ही पूजा हो, चाहे वह कितना ही दुर्गुणी हो और गुणियों का, सज्जनों का तिरस्कार हो, ऐसे पैसे व पैसे वालों का ममत्व तोड़कर मृत्युवरण करना ही श्रेयस्कर है। यह चिंतन करके उठी और सोचने लगी उसका उपाय और कहीं से हाई पॉवर की पोइजन की शीशी लेकर आ गई। फिर एक तरफ बैठकर उसने सबसे पहले अपने पतिदेव के नाम, दूसरा अपने माता-पिता के नाम, तीसरा समाज के ठेकेदारों के नाम, चौथा युवक-युवतियों के नाम, पांचवा धर्मगुरुओं के नाम पर, इस प्रकार क्रमशः पांच पत्र लिखे। वे निम्न प्रकार के भावों से युक्त थे।

(12)

प्रथम पत्र

मेरे सुहाग के सिन्दूर आदरणीय पति प्राणेश्वर

सादर चरण वन्दन।

मेरा महान अहोभाग्य है कि मुझे आप जैसे धीर-वीर, गम्भीर, सहिष्णु पतिदेव की चरण चंचरिका बनने का सुअवसर मिला। मैं अपने मन में अनेक अरमानों को संजोती हुई माता-पिता, परिवार के स्नेहिल वातावरण को

छोड़कर आपके साथ विवाह के बन्धन में बंधकर इस घर में आई। आपका अतुल स्नेह व सम्बल प्राप्त कर मुझे पूर्ण आत्मसन्तुष्टि मिली। लेकिन यहाँ आने के बाद आपके पारिवारिक वातावरण को समझने का भरसक प्रयत्न किया तो पाया कि यहाँ इस घर में तो सारी पैसे की ही माया है। इन्होंने तो पैसे को ही परमेश्वर मान लिया है। रात-दिन, उठते-बठते, खाते-सोते पैसे की ही बात है, न भगवान का नाम है, न धार्मिक काम है। जबसे आपके छोटे भाई राकेश की सगाई हुई तब से लगाकर शादी होने के बाद तो इस घर में मुझे एक साधारण दासी से भी गई-गुजरी समझली है। चाहे कितनी ही दौड़-धूप करो, इनकी हाजरी बजाओ, फिर भी मेरा खाना-पीना भी पसन्द नहीं आता जो नहीं आता, पर रात-दिन मेरे परोपकारी माता-पिता को कोसते रहते हैं और मुँह में आवे जैसे अंट-शंट बकते रहते हैं।

साथ ही आश्चर्य तो इस बात पर होता है कि मेरे कारण आप रात-दिन इनके सामने नौकर की तरह दौड़-धूप करते रहते हैं, फिर भी कोई कद्र नहीं और उल्टे ताने मार-मार कर अपमानित करते रहते हैं। इस कारण अब मेरा मन इस जीवन से ऊब गया है। इन विषभरे वचनों के तीरों को सहन करते-करते गले तक भर आई हूँ। मेरे मन में ऐसा जीवन जीने के लिये अत्यन्त ग्लानि उत्पन्न हो गयी। इसलिये ऐसे जीवन को जीने के बजाय मरना श्रेष्ठ-समझ कर मैंने स्वेच्छा से यह निर्णय लिया है कि इस जीवन से तो मृत्यु का वरण

करना ही श्रेष्ठ है। इसलिये मैं आज इस जीवनलीला की यहीं समाप्ति करती हूँ। मेरे कारण आपको अपने परिवार से उपेक्षा मिली, इसके लिये हार्दिक क्षमायाचना चाहती हूँ। आप मुझे क्षमा करें। इन्ही भावों के साथ अन्तिम प्रणाम।

आपकी चरण चंचरिका

पद्मा

(13)

दूसरा पत्र माता-पिता को-

आदरणीय मेरे अनन्त उपकारी माता-पिता, भाई-भाभी एवं समस्त छोटे-मोटे परिवारजन को पद्मा का प्रणाम। आपने मुझे अनेक कष्टों को सहन करके जन्म दिया और पूरे लाड-प्यार से मेरा लालन-पालन किया। साथ ही अपनी खून-पसीने की कमाई का पैसा खर्च करके पढाई-लिखाई कराकर मेरी शादी की और उसमें अपनी सामर्थ्य से ज्यादा पैसा खर्च किया। यह तो मेरा महान सौभाग्य था कि मुझे मेरे जीवनाधार, व्यवहार- कुशल पढे-लिखे सर्वोच्च गुणों से सम्पन्न पतिदेव मिले। जिनकी चरण- शरण में रहकर मेरा जीवन अत्यन्त आनन्दमय व्यतीत हो रहा था। प्रतिपल मुझे खुश रखने का ही प्रयास किया और अन्तिम समय तक अपना प्यार व स्नेह लुटाते रहे। लेकिन जिस परिवार में धर्ममय संस्कार ही न हो और जहाँ धन को ही सब-कुछ माना जाता है, उस घर में इंसान

की कुछ भी कीमत नहीं होती है। वहाँ तो रात-दिन पैसे का ही वातावरण बना रहता है फिर वह पैसा चाहे कितनी ही अन्याय-अनीति के आधार पर प्राप्त क्यों न हो। पैसे के बल पर कैसा ही दुराचारी, कुव्यसनी, दुर्गुणी व्यक्ति क्यों न हो, उसको पूजा जाता है, उसकी महिमा गायी जाती है और पैसे की कमी वाला इंसान कितना सद्‌गुणी, सदाचारी, विनीत, न्याय-नीति से चलने वाला धर्मी भी हो तो भी उसकी इज्जत नहीं होती। ऐसे निकृष्ट वातावरण में जीना कितना दुष्कर होता है, वह तो जीने वाला ही जान सकता है। मेरे पूज्यजनों ! मेरे जीवन की भी यही दशा बनी हुई है। जब से मैंने इस घर में प्रवेश किया, उसी दिन के साथ ही मेरे देवर राकेश की शादी के बाद तो मेरी दशा हीन से हीनतर होती जा रही थी।

मैंने अपने को एडजेस्ट करने का खूब प्रयत्न किया। न मैंने अपने पतिदेव के सामने और न आस-पड़ौस के सामने इस बात का जिक्र किया। सोचा- क्यों अपने दुःख से दूसरों को दुःखी करूं, लेकिन अबकी बार तो हद हो गई। आपसे विदा होकर आई तो बस एक ही बात कि तेरे पिताजी ने जो जेवर बाद में देने का वादा किया, वह लाई क्या ? मैंने उनको सारी आर्थिक परिस्थितियाँ समझाने की कोशिश की, पर उनके सिर पर तो धन का नशा चढा हुआ था। वे कब किसी के दुःख-सुख की फिक्र करेंगे ? उनको तो बस धन ही प्यारा है, इसलिये रात-दिन बातों के ताने,

यहाँ तक कि उसके कारण पतिदेव की भी उपेक्षा। यह देखकर मेरा मन इस जीवन से इतना ऊब गया है कि अब मैं इन धन के भूखे भेड़ियों से न आपको और न अपने पतिदेव को दुःखी बनाना चाहती हूँ। इसलिये आज ही मैं अपनी स्वेच्छा से इस जीवन को समाप्त कर रही हूँ। आपका मेरे जीवन पर महान उपकार है, लेकिन अफसोस इस बात का होता है कि मेरे कारण आपको कितने घर खंगालने पड़े, कितनों की जी-हजूरी करनी पड़ी। लेकिन आपको कुछ यश नहीं मिला। आप मुझे इसके लिये क्षमा करें। मैं आप सबसे हार्दिक क्षमा चाहती हूँ। आप मेरे पीछे दुःखी न बनें और पूर्ण धैर्यता धारण करें। बस, इन्हीं भावों के साथ मेरा सबको अंतिम प्रणाम।

आपकी प्यारी पुत्री
पद्मा

(14)

तीसरा पत्र समाज के ठेकेदारों के नाम-

सम्माननीय समाज के कर्णधारो ं !

सादर जय जिनेन्द्र।

जब मैं सद्गुरुदेवों के मुखारविन्द से शास्त्रीय वचनों को श्रवण करती कि जैन धर्म का प्राप्त होना महान दुर्लभ है, जिसका महान् पुण्योदय होता है उसी को जैन धर्म मिलता है, जिसके लिये देवता भी तरसते हैं, ऐसा सुनकर

मुझे बेहद खुशी होती और अपने भाग्य को सराहती कि मुझे देव- दुर्लभ जैन धर्म मिला। इसलिये मैं बहुत ही स्वानुभूति के साथ हर धार्मिक क्रिया में बड़े उत्साह और उमंग से भाग लेती रही लेकिन उमंग मेरी बाल्यावस्था तक ही रही। ज्योंहीं मैंने यौवनावस्था में प्रवेश किया, मेरी सारी उमंगों, मेरे सारे अरमानों को उन धर्मधोखेबाजों, नर-पिशाचों और धन के भूखे भेड़ियों को देखकर चूर-चूर हो गयी। क्योंकि एक तरफ धर्म के ठेकेदार अहिंसा परमोधर्म की जय बोलने वाले हरी वनस्पति, जमीकन्द आदि की हिंसा के पाप से डरने वाले वे ही व्यक्ति धनलिप्सा में उन्मत्त होकर उन भेड़-बकरियों को बेचने-खरीदने वाले कसाइयों से भी बदतर हीन से हीन तरीके अपना कर अपने नौनिहाल कलेजों के टुकड़े पुत्र-पुत्रियों की बोलियां चढ़ाकर हर्षानुभूति कर रहे हैं और बोलियों पर बोलियां चढ़ाकर कोई तिलक के बहाने तो कोई दहेज के बहाने अपनी लिप्सा का पोषण करते हैं। जिसके कारण समाज की कितनी युवतियों को अपने जीवन की आहुतियां देनी पड़ रही हैं और कितनी युवतियों को अधमरा जीवन जीना पड़ रहा है तो कई बे-मौत मरने को विवश हो रही हैं। उन्हीं युवतियों के साथ मैं भी आज अपने जीवन को जोड़ने के लिये विवश हूँ।

मेरे माता-पिता ने मुझे स्नेह से पाल-पोष कर पढ़ाया- लिखाया और अच्छा वर-घर देख कर परणाया। मेरे अहोभाग्य से मुझे अच्छे, सुशिक्षित, मिलनसार,

व्यवहारकुशल, पूर्ण स्नेह, प्रेम, आत्मीयता देने वाले पतिदेव तो मिले परन्तु धन के भूखे भेड़िये सास, ससुर, देवर आदि से तो मैं पूरी तरह से तंग आ गई हूँ। प्रतिदिन मेरे माँ-बाप पर कसे जाने वाले तानों और एक दासी से भी हीनतम मेरे साथ किये जाने वाले व्यवहार से मेरे अन्तः मन में ऐसे जीवन से ग्लानि उभर गई। आखिर सब तरह से विवश होकर ऐसे जीवन से मुक्ति पाने हेतु मैं इस आत्महत्या जैसे निकृष्ट पाप को अपने आठवें महीने की सुहागरात के दिन अपनाने हेतु तत्पर हुई हूँ। साथ ही इस पापाचरण में अपने निकट सम्बन्धियों, धर्म के ठेकेदारों के साथ उन समाज के कर्णधारों को भी सहयोगी मानती हूँ जो इन धन के भूखे भेडियों को प्रत्यक्ष अथवा परोक्ष रूप से सीधे या उल्टे तरीके से बढ़ावा दे रहे हैं। मैं आज अपने जीवन के अंतिम क्षणों में समाज व उसके जाने-माने कर्णधारों को यह चेतावनी दे रही हूँ कि अब भी आप अपनी थोथी ठेकेदारी से बाज आवें, संभल जायें। नहीं तो उन्नत जैन समाज की प्रतिष्ठा आपके हाथों मटियामेट हो जायेगी। मेरे जीवन के अंतिम क्षणों में जो अंतः व्यथा पत्र के माध्यम से प्रगट की है, यह सोचकर कि मेरे जीवन के बलिदान पर भी यदि समाज संभल जाय तो आगे अनेक युवतियों का भविष्य उज्ज्वल बनेगा तो मुझे परभव में भी कुछ आत्मशान्ति की अनुभूति होगी। जीवन के अंतिम सांस की इसी आशा के साथ।

जैन समाज की एक बाला

पद्मा

(15)

चौथा पत्र सखियों, युवतियों के नाम पर

मेरी प्यारी सखी-सहेलियों, युवतियों

सादर जय जिनेन्द्र।

आपका और मेरा महान अहोभाग्य है कि हमको ऐसे पवित्र जैन धर्मानुयायियों के कुल में जन्म मिला जिसके कारण हमको अपने जीवन का मूल्यांकन करके स्वाभिमानपूर्ण जीवन जीने की कला सीखने हेतु त्यागी वैरागी संत-सतियों का सान्निध्य मिलता रहता है। लेकिन आश्चर्य इस बात पर हो रहा है कि आज आये दिन हमारी ही समाज की युवतियों को भेड़ बकरियों के समान बिककर आत्महत्या जैसे पापाचरण हेतु विवश होना पड़ रहा है। लेकिन चिन्तन इस बात पर करना है कि यह दोष किस पर डाला जाय। क्या उन व्यक्तियों पर अथवा उस समाज पर, जो दहेज-तिलक की होड़ लगा रहे हैं या उनको प्रोत्साहित कर रहे हैं या हम खुद हैं ? हालांकि उनको भी बख्शा नहीं जा सकता है लेकिन जब गहराई में जायें तो इसकी ज्यादा हकदार हम ही हैं क्योंकि आज हम स्वयं शिक्षित एवं सोचने-समझने का सामर्थ्य रखती हुई भी अपने भविष्य के बारे में बिना कुछ निर्णय लिये ही चुपचाप मूक भेड़-बकरी की तरह खुले मैदान में इन धन के भूखे भेडियों के हाथों नीलाम होने हेतु तत्पर हो जाती हैं मानो मुंह पर

सौ-सौ ताले लग गये हों। न हम कुछ प्रतिकार करती हैं, न हम कुछ बोलती हैं।

यही कारण है कि कालान्तर में जब उसमें थोड़ी-सी कमी पड़ते ही बस बरसने लगते हैं बात-बात पर तानों के तीर और मच जाता है गृह- कलह और उससे व्यथित होकर आखिर में बेमौत मरने हेतु विवश होना पड़ता है। उन्हीं की कड़ी में मैं भी जुड़ने हेतु विवश होकर आत्महत्या जैसे पाप को अपनाने हेतु तत्पर हो रही हूँ। फिर भी मेरे जीवन के अन्तिम क्षणों में मेरी सखियों, युवतियों के बारे में जो विचार प्रस्फुटित हुये, वे इस पत्र के माध्यम से पहुंचा रही हूँ ताकि आपको कुछ चिन्तन करने का अवसर मिले और समाज में एक आन्दोलन करके ऐसे दुष्कर्म से हमारी सखियों, युवतियों को बचने की प्रेरणा मिले।

इसलिये प्यारी सखियो ! एक वह जमाना था जब हमारी समाज की युवतियाँ निरक्षर थीं जिन्हें अपनी भविष्योज्ज्वलता का कोई भान नहीं था। वे अपने को भाग्य भरोसे इन वासना एवं धन के भूखे भेडियों को समर्पित कर देती। फिर चाहे तारें या मारें। न कोई कहने वाला, न सुनने वाला। लेकिन आज तो आप शिक्षित हैं। अपनी भविष्योज्ज्वलता का निर्णय आप स्वयं ले सकती हैं। साथ ही आज तो कानून भी आपके साथ है। इसका यह तात्पर्य नहीं कि आप कुल, मर्यादा, धर्म व सामाजिक गौरव को भूल जायें और उनके सामने निर्लज्जता से पेश आवें। लेकिन

इतनी भी कमजोर नहीं बनें कि हमारे ऊपर मनचाहे अत्याचार होते जायें। हमारे अंतरमन में इतना तो स्वाभिमान होना ही चाहिये कि जहाँ हमको ढोरों की तरह नीलाम किया जाय और हमारे जीवन से भी ज्यादा धन को महत्त्व दिया जाय।

साथ ही हमारे परमोपकारी जन्मदाता माता-पिता और परिवार वालों को बुरी तरह से इसके लिये तंग किया जाय। जिसके फलस्वरूप उनको कर्जदार बनकर जिन्दगी-भर हमारे नाम पर रोना पड़े। ऐसे प्रसंग पर हमको पूर्ण धैर्यता के साथ उन धन के भेड़ियों को स्पष्ट बता देना चाहिये कि मुझे किसी गरीब से गरीब के साथ स्वाभिमानपूर्वक जाना मंजूर है, लेकिन इस प्रकार नीलाम होना कभी नहीं चाहती। फिर चाहे मुझे जिंदगी- भर कंवारी ही रहना पड़े और मेहनत-मजदूरी करके जीवनयापन क्यों न करना पड़े अथवा आजीवन ब्रह्मचर्य का पालन करते हुये यदि शक्ति जाग्रत हो जाय तो संयम मार्ग पर प्रव्रजित हो जाऊँगी, नहीं तो समाज या राष्ट्र की सेवा में जीवन को समर्पित कर दूंगी।

यदि इतना-सा भी साहस मेरे इस बलिदान से युवतियों में जाग्रत हो गया तो मुझे परभव में भी बहुत शान्ति मिलेगी और मेरी अनेक बहनें मेरी तरह से बेमौत मरने से बच जायेंगी।

ऐसी मेरे जीवन की अंतिम भावना हैं।

बस, आपकी ही एक सहेली

पद्मा

(16)

पंचम पत्र संत-मुनियों के नाम पर

श्रद्धेय धर्मगुरु, धर्माचार्य, संत-सती वर्ग के पावन चरणों में शत-शत वंदन

मैं आज अपने जीवन की अंतिम घड़ियों में जूझती हुई आपके चरणों में नम्र निवेदन कर रही हूँ कि आप जैसे त्यागी-वैरागी संत-मुनिराजों का सान्निध्य प्राप्त करके भी हमारे इस पवित्र जैन समाज में आये दिन दहेज, तिलक की बलिवेदी पर अनेक युवतियों का बलिदान हो रहा है। यह देखकर मन में बड़ा आश्चर्य होता है कि एक तरफ आप वायुकाय के जीवों की रक्षा हेतु लोगों को खुले मुँह बोलने में पाप का भय दिखाकर मुँहपत्ति मुँह पर बांधने की प्रेरणा देते हो। पीने के पानी में, हरी सब्जी खाने में भी पाप बतलाते हो, उसी समाज में ऐसी भयंकर हिंसा आये दिन बढ़ती जा रही है।

इस बात का गहरा चिन्तन करके मेरा मन बोल रहा है कि इन धन के भूखे भेड़ियों को बलवान बनाने में आपका सान्निध्य भी सहायक बन रहा है। क्योंकि आप आये दिन अपने व्याख्यानों में उन बड़े-बड़े श्रेष्ठियों के जीवनवृत्त प्रस्तुत करते हुये कभी तो जम्बूकुमार के निन्नाणू क्रोड़ के दहेज की तो कभी गौतमकुमार के आठ क्रोड के दहेज की बातें बढ़ा-चढ़ा के सुनाकर इनके अंतरमन में

प्रतिस्पर्धा पैदा कर देते हो, जिससे इनके मन में भी आपके मुंह से ऐसे ही प्रमाणपत्र लेने की तीव्र तमन्ना जाग्रत होती है।

फिर ऐसे खुलेआम दहेज के प्रदर्शन करने वाले और थोड़ी-सी कमी पड़ते ही बहुओं को जला देने वाले या फिर बेमौत आत्मघात जैसे निकृष्ट पापाचरण हेतु विवश करने वाले धन के भूखे भेडिये जब आपकी सभा में आ जाते हैं तो आप उनको आगे बैठाकर पुण्यवान, दानवीर, धर्मात्मा श्रावकजी आदि न मालूम कैसे-कैसे विशेषणों से विभूषित करने में कोई कसर नहीं छोड़ते हैं।

जिसके कारण इनका हौसला इतना अधिक बढता जा रहा है कि जैसे-तैसे धन को प्राप्त करके उसमें से थोड़ा-सा धन धर्म-कार्य में लगाकर चापलूसों की वाहवाही लूट कर बड़े-बड़े दानवीरों की लिस्ट में जुड़ जाते हैं। जिससे उनका हाल बिच्छू काटे बन्दर की तरह बेहाल हो जाता है। फिर तो वे अपने सामने अन्य को कुछ नहीं समझते हैं और फिर समाज में धन के मद में बेभान होकर कुरीति-रिवाजों का पोषण करने में बाज नहीं आ रहे हैं। इसलिये श्वास की अंतिम घड़ियों में जूझते हुए मेरा आपसे नम्र निवेदन है कि आप अब ऐसे व्यक्तियों को प्रोत्साहित न करते हुए इनके इन दुष्कर्मों को छुड़ाने की पहल करें जिससे समाज की अनेक बहुओं-बेटियों को बेमौत मरने की विवशता से छुटकारा प्राप्त हो।

जो लोग ऐसी प्रवृत्तियों से बाज नहीं आते हों, उनको

समाज में आगे लाने की कोशिश न करें एवं हो सके वहाँ तक ऐसे घरों में शिक्षा हेतु भी नहीं जायें तब ही समाज में कुछ सुधार होगा और लोगों को शिक्षा मिलेगी। यही आपके चरणों में मेरी अंतिम प्रार्थना है। मेरे इस पत्र लेखन में आपकी किसी प्रकार की आशातना हुई हो तो मुझे क्षमा प्रदान करें। साथ ही, मेरे एक के बलिदान से समाज की अनेक बहनों को जीवनदान मिले, इसी भावना के साथ आपके चरणों में अन्तिम वंदना।

आपकी श्रमणोपासिका
पद्मा

(17)

पद्मा ने इन पांचों ही पत्रों को लिखकर लिफाफे में बन्द कर दिया और चिपका कर अपने तकिये के नीचे रख दिया। फिर उसने अपने दोनों हाथों में मेंहदी रंग दी। उसके बाद शादी के बाद जिस पोशाक को पहन कर पहली बार आयी थी, उसी पोशाक व चूड़ियों को व उन विवाह के मंगल सूचक मोरचूंदड़ी आदि को पहन कर जिस पलंग पर पहली सुहाग-रात मनाई थी, उसी पलंग पर बैठ गई।

इतने में सतीश भी अपनी दुकान का काम निपटा कर घर आया, भोजन किया और अधिक थकान होने से सीधा सीढ़ियों के दरवाजे की सांकल लगाकर ज्योंही कमरे में जाकर दरवाजा बन्द किया त्योंही पद्मा उठी और सतीश

को नमस्कार करके नमो अरिहंताणं का उच्चारण करते हुये पलंग पर बैठी-बैठी मुंह फेर के पड़ी हुई पोइजन की शीशी उठाकर आधी अपने मुंह में उंडेल दी और आधी एक तरफ रख कर सो गई। इतने में सतीश ने देखा और ज्योंही उसे संभालने लगा इतने में तो उसके प्राण-पंखेरू उड़ गये। अचानक यह दृश्य देखकर सतीश किंकर्तव्यविमूढ़ सा हो गया। वह हैरान होकर इधर-उधर देखने लगा। उसकी दृष्टि पास पड़ी पॉईजन की शीशी पर पड़ते ही तो उसको सारा रहस्य समझने में देरी नहीं लगी कि आज हो-न-हो निश्चित ही कोई विशेष घटना घटी जिससे पूर्ण दुखित होकर इसने अपनी जीवनलीला समाप्त कर दी है।

सतीश खड़ा-खड़ा विचार करने लगा कि अब मेरा क्या हाल होगा ? अब शेष जीवन को किस प्रकार व्यतीत करूंगा ? जब यह बात बाहर प्रकट होगी तो बदनामी के कलंक का टीका मेरे सिर पर मंडेगा। लोग यही कहेंगे कि इसने ही अपनी पत्नी को जहर दिया है क्योंकि मैं ही अभी यहां हूँ। दूसरी बात कि यदि बात दब भी जायेगी तो पुनः मेरी शादी करने में कितनी दिक्कत आयेगी ? एक पत्नी की हत्या के कलंक का टीका, दूसरा दहेज के नाम पर रात-दिन होने वाला गृहक्लेश। ऐसी परिस्थिति में कौन अपनी लड़की की शादी मेरे साथ इस घर में करने को तत्पर होगा ?

कदाचित् पैसे के बल पर पुनः शादी हो भी जायेगी

तो ऐसी सुशील, गुणवान, विनयवान पत्नी का मिलना ही दुर्लभ होगा। चारों तरफ से तिरस्कारयुक्त जीवन ही जीना पड़ेगा। जहाँ जाऊँगा वहाँ व्यक्तियों के ताने सहने पड़ेंगे और सब मेरी उपेक्षा करेंगे। मैं कैसे जीवन व्यतीत करूंगा। इससे तो अच्छा, अपनी जीवनलीला ही समाप्त कर लूं ताकि सारी समस्या ही समाप्त हो जायेगी और यह कहानी यहीं समाप्त हो जावेगी और इस दुःखद जीवन से सदा-सदा के लिए छुटकारा मिल जायेगा।

बस, फिर तो सतीश ने भी अपना मन दृढ बना लिया और पद्मा द्वारा छोड़ी हुई आधी पॉइजन की शीशी उठाई और एक ही साथ मुंह में उंडेल दी और सो गया पद्मा के शव को बाहुपाश में जकड़ कर। थोड़ी ही देर में पॉइजन ने अपना प्रभाव दिखाया और उसके भी प्राण-पंखेरू उड़ गये।

दोनों की निर्जीव देह उसी पलंग पर पड़ी थी जिस पर उन्होंने अपने उज्ज्वल भविष्य के अरमानों को संजोते हुए पूर्ण आमोद-प्रमोदमय वातावरण में अनेक मंगल गीतों एवं मधुर शहनाई की गूंज में अपनी पहली 'सुहाग रात' मनाई थी। आज उसी आठवें महीने की सुहाग रात को उन दोनों ने इस वातावरण से मुक्ति प्राप्त करने हेतु सदा-सदा के लिये अपनी जीवन- लीला समाप्त कर दी।

(18)

पद्मा सासुजी के अभद्र व्यवहार से ऊब कर संध्या का भोजन किये बिना ही अपने शयन कक्ष में ऊपर चली गई। साथ ही कमरा भी ऊपर इतना एकान्त था कि सहज उस ओर किसी का ध्यान ही नहीं जाता था। दूसरी बात, आकर भी कौन सम्भालें। हो किसी के हृदय में इंसान के प्रति आत्मीयता। वहां तो सारे परिवार में धन के प्रति ही आकर्षण था। वहाँ तो व्यक्ति का मूल्यांकन ही धन था। गुण और कर्म से उनका कोई लेना-देना ही नहीं था। ऊपर से चोला भले मानव का था पर भीतर तो संस्कार दानवता के ही पनप रहे थे।

जिसके कारण किसको फिक्र पड़ी थी कि बहू को इतनी देर हो गई, क्या बात है, क्यों नहीं आई ? कम से कम जाकर के देखूं और समझा कर लाऊँ और खाना खिलाऊँ। वे तो सब अपने धन के नशे में ही इतने बेभान बने हुए थे कि उनके दिल में भी यह विचार नहीं आया कि कहीं हमारे अभद्र व्यवहार से कोई अनहोनी न हो जाय।

इधर सतीश भी अपनी दुकान का कार्य निपटा कर घर आया। लेकिन उसका भी वही हाल था। न उसको पूछने वाला, न कोई प्रेम से यह भी कहने वाला कि आ बेटे ! रोटी खाले, भूख-प्यास लगी होगी। बिचारा विवश था। आखिर कोई कहे, न कहे, भूख लगी थी तो भोजन तो

खाना ही पड़ता। उसने रसोड़े में जाकर जो-कुछ वहाँ बना हुआ था अपने हाथ से लेकर खाया और सीधा कमरे में चला गया नीचे की सीढ़ियों का दरवाजा बन्द करके। उसके बाद वहाँ क्या घटना घटित हुई, कौन जाने और कौन देखे।

रात्रि व्यतीत हो गई। सूर्योदय हुए घंटे-भर से ऊपर समय हो गया तब राकेश उठा और नहाया-धोया, लेकिन देखा कि अभी तक न तो भैया आया, न भाभी। सब घर का काम वैसे का वैसे पड़ा है। न चूल्हा ही जला, न चाय ही तैयार हुई, बात क्या है ? उसका पारा गरम हो गया और चिल्लाते हुये कहने लगा- देखलो अब आप खुद। इतना समय हो गया, अभी तक कोई उठ कर नीचे नहीं आया। दोनों पड़े मस्ती से नींद निकाल रहे हैं। उनको तो कोई चिन्ता ही नहीं। न भाभी घर का काम पूरा संभालती है, न भैया दुकान का। आजकल पूरे दुकान पर बैठते ही नहीं। दिन-भर किधर घूमते रहते हैं और शाम को आते ही तो बस खाया-पीया और भाभी का पल्ला पकड़े ऊपर चढ़ जाते हैं। ऐसे कब तक काम चलेगा ?

ऐसे बड़बड़ाहट करते हुये जोर-जोर से आवाज लगाने लगा। लेकिन सुने कौन ? कौन उत्तर दे ? जब इतनी आवाजें लगाने पर भी न प्रतिउत्तर मिला और न कोई नीचे आया तब तो उसका पारा और गरम हो गया और जाने लगा ऊपर। लेकिन सीढ़ियों का दरवाजा भीतर से बन्द था। बहुत खटखटाने पर भी नहीं खुला तो फिर जैसे-तैसे ऊपर से

चढ़कर दरवाजा खोला और जोर-जोर से आवाज लगाता हुआ ऊपर गया। लेकिन ऊपर से कमरे का दरवाजा भी भीतर से बन्द होने से तो वह इतनी जोर से गुस्से में आवाज लगाने लगा कि आस-पड़ौस के व्यक्ति भी सुन कर घर से बाहर आ गये और कहने लगे- क्या बात है ? राकेश आज सुबह-सुबह इतना क्यों चिल्ला रहा है ?

तब राकेश बोला- क्या बताऊँ भाई ! आजकल भैया सतीश और भाभी इतने सिर चढ गये हैं कि उनको घर की कोई चिन्ता ही नहीं है। सूर्योदय हुए पूरे दो घंटे हो गये। अभी तक उठने का नाम नहीं। बोलो तुम्हीं, ऐसे कैसे काम चलेगा ? ऐसा कहकर जोर-जोर से आवाज लगाते हुये दरवाजा खटखटाने लगा। पर कोई जवाब नहीं मिला। सब पड़ोसी युवक भी शंकित होकर ऊपर आ गये। जो राकेश के स्वभाव को जानते थे और सतीश के प्रति पूर्ण आत्मीयता रखते थे, उन्होंने भी कमरे को खोलने के लिये आवाज लगाई। पर वही हाल। कोई प्रतिउत्तर नहीं मिला। तब उनका मन और शंकित हो उठा और आखिर दूसरी तरफ से बरामदे में कूदकर उधर की खुली खिड़की में झांका तो हतप्रभ हो गये और चुपचाप अपने घर से पुलिस स्टेशन खबर पहुँचा दी।

यह खबर मिलते ही पुलिस सीधी वहाँ पहुंच गई और दनादन घर में घुस कर सारे घर को घेर लिया। तब राकेश को कुछ मालूम पड़ा। आखिर कुछ पुलिस के जवान

तो घर को चारों तरफ से घेर कर खड़े हो गये और कुछ जवानों ने ऊपर चढकर कमरे के दरवाजे को खोला और दोनों शवों को कब्जें में करके सारे कमरे की तलाशी लेने लगे।

ज्योंही उन्होंने बिस्तर के ऊपर से तकिये को उठाया तो पद्मा के हाथ से लिखे पांचों पत्र मिले और वहीं पड़ी तेज पावर वाली पॉइजन की शीशी भी जिनको पुलिस इंस्पेक्टर ने अपने कब्जे में ले लिया। इधर उसी समय आस-पड़ोंसियो में से किसी ने पद्मा के पीहर में भी समाचार भेज दिये जिनको पाते ही जो साधन मिला उसमें बैठकर वे भी पहुंच गये।

इधर सारे गांव में यह बात फैलते ही तो सब दौड़-दौड़ इकट्ठे हो गये और देखने लगे उस माहौल को। उनमें से अधिकांश व्यक्ति पद्मा और सतीश के साथ होने वाले दुर्व्यवहार से परिचित होने के कारण सब सास-श्वसुर और राकेश पर थूकने लगे और कहने लगे- इस हत्या का कारण ये ही हैं। हमेशा धन के लोभ में इनके साथ जो दुर्व्यवहार कर रहे थे, वह किसी से छुपा हुआ नहीं था। दोनों ही तो बेचारे इतनी सज्जन प्रकृति के थे कि सब दुःख भीतर ही भीतर सहन करते रहे लेकिन कभी किसी के सामने इन्होंने जिक्र ही नहीं किया। हो-न-हो इनके साथ आज अति दुर्व्यवहार हो जाने से इन्होंने यह रास्ता अपनाया। हाय ! धिक्कार है, इन धन के भूखे भेड़ियों को। क्या धन ही जीवन में सब कुछ है ?

क्या काम आया धन ? ऐसे इनके कारनामों ने तो सारे जैन समाज ही क्या, सारे मानव समाज को भी लज्जित कर दिया है। अब कैसे मुँह दिखायेंगे ? कितनी धन की बरबादी होगी ? ऐसे ही सब जितने मुँह उतनी बातें कर रहे थे।

(19)

इधर पारिवारिक जन माता-पिता आदि का तो बेहाल था ही। वे फूट-फूट कर रो रहे थे और लोगों को बता रहे थे कि ऐसी बात कभी इन्होंने हमें बताई नहीं। पद्मा अभी-अभी तो वहाँ रहकर आई थी और कंवर साहब सतीशजी भी लेने आये थे। उन्होंने भी कभी अपने दुःख की बात नहीं बताई। यदि बता देते तो हम अपना घर-झोंपड़ा बेचकर भी इनके माता-पिता की धन की इच्छा की पूर्ति कर देते और इनको भी वहीं लेकर चले जाते। पर इन्होंने कभी इसका जिक्र ही नहीं किया। हाय ! अब क्या करें। हमने तो कंवर साहब के सद्व्यवहार को देखकर उनको सारी स्थिति बताकर ही यह सम्बन्ध किया था और विवाह में भी अपनी शक्ति से ज्यादा धन खर्च किया था। हमारे दिल में तो हर समय यही भाव जाग्रत होते रहते कि हमारी एकाएक लाडली है, हमारी आर्थिक स्थिति में सुधार आते ही ज्यादा से ज्यादा प्रीति निभायेंगे। लेकिन आज दोनों ने एक साथ यह क्या निर्णय ले लिया ?

तब लोग उनको धैर्य बंधाते हुये कहते-भाई साहब, हम आठ महीनों से देख रहे थे, धन्य है आपको कि पुत्री को आपने उसको कैसे सुसंस्कार दिये जिनके कारण इसके ऊपर रात-दिन जुल्म पे जुल्म किये जा रहे थे और राकेश की शादी के बाद तो इसके ऊपर विपत्तियों का पहाड़ ही टूट पड़ा। उसके ससुराल से धन क्या आया, इस घर में एक शैतान ही आ गया और यह करोड़पति बाप की बेटी क्या आई, एक तरह से डाकण आ गई। जिसके कारण इन सेठ-सठानी के साथ निरा भोंदू राकेश, जो सतीश के अंगुष्ठ की बराबरी नहीं कर सकता है उसे भी इतना घमण्ड आ गया कि उसके पांव ही धरती पर नहीं टिकते। धन के अहं के आगे सतीश और उसकी पत्नी को तो घर के साधारण दास-दासी से भी गया-गुजरा समझने लग गया। न कोई लज्जा, न कोई शर्म, बस बिचारों पर हर समय तीखे तानों की बौछार करता रहता है। फिर भी धन्य है इन दोनों को, जिन्होंने अपने सब दुःखो को भीतर ही भीतर सहन किया। न कभी इन्होंने आस-पड़ोस या अपने यार-दोस्तों को भी बताया।

लेकिन आखिर व्यक्ति की सहन करने की भी तो हद होती है, कितना सहन करें। कल तो कुछ ज्यादा ही अत्याचार हुआ लगता है। क्योंकि आखिर हम भी पड़ोसी हैं, कुछ-न-कुछ मालूम पड़ ही जाता है। पर यह सोचकर चुप बैठे रहते कि कौन इनसे झगड़ा मोल ले, न तो इनको

कुछ बोलने का भान, न इज्जत का डर। धन के नशे में इतने बेभान कि यदि थोड़ा भी कोई इनके विपरीत बोले तो ये पैसा फेंककर किसी तरह से फंसाने में नहीं हिचकिचाते इसलिये चुप रहने में ही हित समझकर सब-कुछ देखते-जानते हुये भी चुपचाप रहते हैं। हमको क्या मालूम कि भीतर ही भीतर यह मामला इतना बढ़ जायेगा। पर अब चुप बैठने से काम नहीं चलेगा, आप धैर्य रखिये। हम सब आपके साथ हैं। अब चुप रहना समाज व धर्म के लिये हितकर नहीं है। अब तो ऐसे लोगों को शिक्षा देने की परम आवश्यकता है।

इतने में तो देखते ही देखते युवक-युवतियों में भारी रोष व्याप्त हो गया। वे सब संगठित होकर सभी बाजार बन्द कराके इसके लिये कठोर कार्यवाही कराने हेतु मीडिया, सरकार को जोर-जोर के नारे लगाकर आह्वान करने लगे। बात-बात में हजारों लोग इकट्ठे हो गये।

(20)

इधर पुलिस के कर्मचारी भी बड़ी संख्या में वहां पहुंच गये और सारे परिवार को गिरफ्तार करके, घर को सील करके, दोनों शवों को उठाकर पुलिस स्टेशन लेके जाने लगे। तब हजारों व्यक्ति एक भारी जुलूस के साथ पीछे हो गये। कोई कहने लगे- इनको गधे पर बैठाकर काला मुँह करके ले जाओ, कोई उन पर थूकते, कोई सतीश और

पद्मा के नाम पर जोर-जोर से फूट-फूट कर रोते हुये चल रहे थे। कोई इन पर जूते बरसाने के लिये भी उतावले हो रहे थे। पर पुलिस ने बड़ी मुश्किल से जनता पर नियन्त्रण कर रखा था। जैसे-तैसे बड़े-भारी जुलूस के साथ पुलिस स्टेशन पहुँचे और चारों तरफ से उसको घेर कर धरना देकर बैठ गये।

इधर मीडिया भी पूरा सक्रिय था। उसने भी बड़ी सक्रियता से उन सारे प्रसंगों के फोटू एवं प्राप्त तेज पावर वाली पॉइजन की शीशी के साथ ही पद्मा के हाथ से लिखे पत्रों की फोटो कापियाँ उतार के बड़े-बड़े हेडिंगों के साथ पूरे भारत में चलने वाले अखबारों में बड़ी सनसनी के साथ छाप दिय-देखो धर्म के ठेकेदारों, समझो, जागो युवक-युवतिओं ! चेतो धर्मगुरुओं !

ज्योंही टीवी, रेडियो और न्यूज पेपरों में यह खबर गांव-गांव, नगर-नगर में पहुंची तो एक भारी सनसनाहट फैल गई। कई जगह युवक युवतियों व सामाजिक संगठनों के प्रमुखों ने अपने-अपने प्रतिष्ठान बन्द कराके भारी जुलूस के साथ गली- गली में नारे लगाते हुये कलेक्टरी, पुलिस स्टेशन आदि स्थानों पर हजारों लोगों के हस्ताक्षर कराके आवेदन पत्र पेश करके धरना देकर भूख हड़ताल पर बैठने लगे। सबकी एक ही आवाज थी कि अब ये अत्याचार शीघ्रातिशीघ्र बन्द हो। युवक-युवतियों में तो भारी जोश व्याप्त हो गया। अपने नाम से पद्मा के हाथ के लिखे पत्रों

को पढ़कर वे स्थान-स्थान पर अपनी सभाएं बुलाकर यही प्रस्ताव बनाने लगे कि हम अब किसी प्रकार का दहेज न मांगेंगे और न लेंगे और जहाँ दहेज लेने-देने का काम हो, उस विवाह-शादी में, पार्टी में नहीं जायेंगे। कइयों ने तो निर्णय लिया कि केवल दस्तूर के रूप में रुपया-नारियल और सुहाग के मंगलसूत्र, मंगल वस्त्र, वर राज के एक सादी अंगूठी के अलावा विवाह प्रसंग पर कुछ नहीं लेंगे। कहीं पर ये प्रस्ताव पारित हुए कि लड़के के पिता अपनी पुत्री को प्रीतिस्वरूप कुछ भी दे, न तो उसका ठहराव करेंगे और न दिखावा, न ही प्रदर्शन करेंगे। न पूछेंगे, न देखने जायेंगे। साथ ही कइयों ने प्रस्ताव पारित किये कि इस विवाह के नाम पर फिजूलखर्ची से बचने हेतु सामूहिक विवाह पद्धति को अपनाकर एक टाइम भोजन के साथ दिन-दिन में ही सारे कार्य निवृत्त करेंगे।

जिसमें रात्रि भोजन के पाप के साथ डेकोरेशन के फिजूल खर्चे से भी बच जायेंगे। कहीं ये भी प्रस्ताव पारित हुए कि भोजन के नाम पर इतने आइटम से ज्यादा नहीं बनेंगे। साथ ही ऐसे विवाह के नाम पर प्रकारान्तर से भी प्रदर्शन करने वाले दहेज इत्यादि की बातें तय करके सौदेबाजी करने वाले और दहेज के नाम पर बहुओं को कष्ट देने वालों पर सामाजिक स्तर पर भी कठोर कार्यवाही के साथ भारी दण्ड व्यवस्था का निर्धारण किया गया।

सरकार से भी ऐसी प्रवृत्तियों को करने वालों पर कठोर दण्ड विधान निर्धारित करने का आवेदन प्रस्तुत किया गया। इसके साथ ही धर्मसभाओं में धर्मगुरुओं के चरणों में भी ये निर्णय लिये गये कि ऐसे व्यक्तियों को न तो समाज में आगे लिया जाये, न ही धार्मिक प्रसंगों पर किये जाने वाले चन्दों-चिट्ठों में अथवा बोलियों में उनको सम्मिलित किया जाय। न ही आगे ऊँचे आसनों व पदों पर ही बिठाया जाय। न इनके नाम लेकर महिमा गाई जाय। न इनके पैसे से साहित्य-सर्जन, भवन-निर्माण आदि कराके उनके नाम के पत्थर ही लगायें, न फोटू और परिचय ही छपाये जायें और न दानवीर, धर्मवीर आदि विशेषणों से विभूषित ही किया जाय और न ऐसे संत-मुनिराज, जो ऐसे व्यक्ति को आगे लावें, उनको गुरु-बुद्धि से सत्कार- सम्मान ही दिया जाये और न ऐसी सभाओं में भाग ही लिया जाय।

इस प्रकार एक बार तो पद्मा और सतीश के इस बलिदान से एक नए क्रान्तिकारी आन्दोलन का सूत्रपात हो गया। अब सबके मन में भी यही विश्वास पैदा होने लगा कि इससे जरूर समाज एक नई दिशा में करवट लेगा ताकि समाज की अनेक बहू-बेटियों को बेमौत मरने हेतु विवश नहीं होना पड़ेगा और समाज व धर्म भी कलंकित होने से बचेंगे।

(21)

इधर पुलिस अधिकारियों ने सारे बयान लेकर न्यायालय में पेश कर दिये थे। न्यायालय ने आस-पड़ौस व पद्मा के हस्तलिखित पत्रों के आधार पर यथार्थ जांच-पड़ताल करके अनेक दबाव व धन का लालच प्रस्तुत होने पर भी जनता की आवाज को सम्मुख रखते हुए ही फैसला सुना दिया कि चारों व्यक्तियों को आजीवन कारावास के साथ पांच लाख रुपयों का हरजाना पद्मा के परिवार वालों को देने का फैसला किया गया और दोनों के शवों को भी उन्हीं को सौंप कर अंत्येष्टि का आदेश दे दिया।

लेकिन पद्मा के माता-पिता ने बड़े दुःख से रुदन मचाते हुए निवेदन किया कि न्यायालय ने न्याय की गौरवता रखते हुये जो आदेश दिया, यह सबसे बड़ी गौरव की बात है, लेकिन बात यह है कि हरजाने के रूप में पांच लाख रुपये की रकम के लिये हमारा इतना ही निवेदन है कि हम ऐसा पैसा नहीं लेना चाहतें हैं जिस पैसे ने आज हमारी लाडली पद्मा और दामाद सतीशजी को बैमोत मरने के लिये विवश किया। उस पैसे को लेना तो दूर रहा, हम छूना भी पाप समझते हैं क्योंकि ऐसा पैसा जहाँ भी, जिसके पास भी जायेगा वहाँ ऐसी ही कलह, अशान्ति पैदा करेगा और उनको बेमौत मरने हेतु विवश करेगा। इसलिये हमारा नम्र निवेदन है कि यह पैसा और इसमें इकावन हजार रुपये

और जोड़कर इन दोनों के बलिदान की यादगार में इनके नाम से ही एक ऐसी संस्था अथवा स्मारक, जिसमें ऐसी बहनें रह सकें जिनको दहेज के नाम पर ताडना-तर्जना, तिरस्कार भरा जीवन जीने के लिये विवश होकर जीवनयापन करना पड़ता है। उनकी फरियाद सुनकर उन्हें दुःखों से मुक्त बनाने का प्रयत्न किया जा सके।

ज्योंहीं यह बात सबके सामने आई तो सब हर्षविभोर हो उठे और सब उनको धन्यवाद देते हुए उसी समय थोड़ी-सी प्रेरणा पाकर लोगों ने उस स्मारक हेतु लाखों रुपयों की राशि की घोषणा करके सरकार से भी जमीन प्राप्त कर ली और उस स्मारक का 'सतीश पद्मा दहेज पीड़ामुक्ति स्मारक' नामकरण करके सरकार द्वारा मान्यता प्राप्त कर उसी स्थान पर बड़े शोकमय वातावरण में सारे नगर की जनता ने अश्रु प्रवाहित नेत्रों से उनका अन्तिम संस्कार किया।

उसके बाद सभी उपस्थित लोगों और संस्थाओं ने अश्रुप्रवाहित नयनों से श्रद्धासुमन समर्पित करते हुये एक प्रस्ताव पारित किया कि किसी भी समाज में दहेज के नाम से ठहराव करके किसी को यदि तंग किया गया तो उनको सारे नगर की जनता के परस्पर व्यवहार से अलग कर दिया जायेगा और इस स्मारक द्वारा जो निर्णय करके दण्ड की घोषणा की जायेगी जब तक वह जमा नहीं होगा तब तक उसके साथ कोई परिवार सामाजिक व नागरिक सम्बन्ध

नहीं रख सकेंगे। और साथ ही जो रखेगा उनको भी कम से कम पांच हजार रुपये के दण्ड का भुगतान इस संस्थान को देना अनिवार्य होगा। नहीं देने पर किसी भी प्रकार से उस रकम को वसूल करने का अधिकार इस संस्था के अध्यक्ष, मंत्री आदि को रहेगा। अर्थात् जिस समय जो कार्य करते होंगे, उनको होगा। साथ ही यह संस्था रजिस्टर्ड होगी और उसका एक बड़ा ट्रस्ट होगा एवं इसके ट्रस्टी भी वहीं होगे जो इकावन हजार रुपये देकर आजीवन सदस्यता प्राप्त करेंगे। उन्हीं को इसकी कार्यकारिणी में लिया जायगा और उन्हें अध्यक्ष, मंत्री आदि पद-प्राप्ति का अधिकार होगा। ऐसा निर्णय लिया गया।

बाद में कुछ लोगों को साथ भेजकर पद्मा के माता-पिता को उनके स्थान पर पहुँचाया गया और वहाँ उनको पूरी तरह से सांत्वना देकर पुनः लौटे।

❖ ❖ ❖